विद्यार्थी दर्पण

SESSION 2025-26





GOVERNMENT DEGREE COLLEGE LAD BHAROL, DISTRICT MANDI (HP)

दसवां संस्करण

Phone No.: 01908-278020
Web: www.gcladbharol.ac.in
Email: gcladbharol@gmail.com
Facebook: Gdc Ladbharol

राजकीय महाविद्यालय लड़भड़ोल

ज़िला मंडी, हिमाचल प्रदेश

दसवां संस्करण

प्रथम
ई-संस्करण

2025-26

महाविद्यालय पत्रिका

विद्यार्थी दर्पण

EDITORIAL BOARD



MEMBERS OF TEACHING STAFF



MEMBERS OF NON-TEACHING STAFF



PRINCIPAL'S MESSAGE.....





DR. MUNISH THAKUR
(OFFICIATING PRINCIPAL)

Dear Students, Esteemed Teachers, and Respected Readers,

A mirror does not merely show a reflection; it also introduces us to ourselves. Similarly, **"Vidyarthi Darpan"** serves as a vibrant reflection of our college's academic atmosphere, as well as the creative consciousness, sensibilities, thoughts, and dreams of our students. This magazine chronicles the countless endeavors that constantly take shape—spanning from classrooms and libraries to sports fields and cultural stages.

I feel immense joy and pride in the publication of the **tenth edition** (Session 2025–26) of "Vidyarthi Darpan." The purpose of education is not limited to the acquisition of knowledge alone; it encompasses the holistic development of personality, the nurturing of moral values, the cultivation of a scientific temper, and the fostering of a sense of responsibility towards society. The academic, cultural, literary, sports, and social activities organized by the college inspire students to hone their personalities and face life's challenges with confidence. "Vidyarthi Darpan" provides a platform for showcasing these very achievements, experiences, and creative expressions.

It is a matter of great delight for us that this magazine has reached its tenth edition. This achievement stands as a testament to the college family's enduring commitment to literary and academic excellence. I am confident that the articles, poems, stories, memoirs, research papers, and other works featured in this issue will enrich the readers' knowledge, thought processes, and sensibilities, while inspiring students to continue advancing on their creative journey.

The articles, poems, stories, memoirs, research papers, and diverse compositions compiled in this issue showcase the students' imagination, intellectual maturity, and engagement with social issues. It is my hope that this edition will inspire readers to engage in reflection, dialogue, and creative innovation. I extend my heartfelt congratulations to the magazine's editorial board, all the faculty members, and the students who have enriched this issue with their writings. I also express my gratitude to every individual associated with this publication; it is through their dedication and hard work that this tenth issue has become a reality. May "Vidyarthi Darpan" continue to provide a powerful platform for the expression of talent and scale new heights in the future.

Happy Reading

मुख्य संपादक की कलम से.....





MR. TILAK RAJ
ASSISTANT PROF. IN ECONOMICS

विद्यार्थी दर्पण के दशम संस्करण और पहला ई-संस्करण के प्रकाशन के अवसर पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता एवं गर्व का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका केवल महाविद्यालय की वार्षिक गतिविधियों का संकलन मात्र नहीं है, बल्कि हमारे विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा, बौद्धिक क्षमता, साहित्यिक अभिरुचि तथा सामाजिक संवेदनशीलता का सशक्त प्रतिबिंब भी है। विगत दस वर्षों की इस गौरवशाली यात्रा में विद्यार्थी दर्पण ने विद्यार्थियों को अपनी लेखनी, विचारों और रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए एक सशक्त मंच प्रदान किया है। इस विशेष दशम संस्करण में विद्यार्थियों की मौलिक रचनाएँ, कविताएँ, कहानियाँ, लेख, संस्मरण, चित्रकला तथा महाविद्यालय की विविध शैक्षणिक, सांस्कृतिक, खेल एवं विस्तार गतिविधियों का समावेश किया गया है, जो हमारे संस्थान की जीवंत शैक्षणिक संस्कृति का परिचायक है। आज के तीव्र परिवर्तनशील युग में ज्ञान, सृजनशीलता और नैतिक मूल्यों का समन्वय अत्यंत आवश्यक है। हमें विश्वास है कि यह पत्रिका विद्यार्थियों में चिंतन, अभिव्यक्ति, नवाचार और सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करेगी तथा उन्हें अपने व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए प्रेरित करेगी।

इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करने वाले आदरणीय प्राचार्य महोदय, सभी प्राध्यापकगण, संपादकीय मंडल, तकनीकी सहयोगियों तथा विशेष रूप से अपने उत्कृष्ट लेखन एवं रचनात्मक योगदान से इस संस्करण को समृद्ध बनाने वाले सभी विद्यार्थियों के प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। आप सभी के सहयोग और समर्पण के बिना इस संस्करण का प्रकाशन संभव नहीं हो पाता। मैं आशा करता हूँ कि महाविद्यालय की यह दशम स्मारकीय प्रस्तुति पाठकों को ज्ञान, प्रेरणा और आनंद प्रदान करेगी तथा विद्यार्थी दर्पण भविष्य में भी इसी प्रकार उत्कृष्टता की नई ऊँचाइयों को स्पर्श करता रहेगा।

आप सभी को इस दशम संस्करण के सफल प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएँ।



DR. MUNISH THAKUR
OFFICIATING PRINCIPAL
PATRON



MR. TILAK RAJ
ASSISTANT PROF. IN ECONOMICS
CHIEF EDITOR



MR. SANJEEV KUMAR
ASSISTANT PROF. IN HINDI
EDITOR HINDI SECTION



DR. PANKAJ KUMAR
ASSISTANT PROF. IN COMMERCE
EDITOR ENGLISH SECTION



DR. PREETI
ASSISTANT PROF. IN POLITICAL SCIENCE
EDITOR PAHARI SECTION



ANSIKA
B.A. III YEAR ROLL NO: 2312002
STUDENT EDITOR HINDI SECTION



SHABNAM
B.COM. III YEAR ROLL NO: 2311009
STUDENT EDITOR ENGLISH SECTION



KOMAL KUMARI
B.A. III YEAR ROLL NO: 2317003
STUDENT EDITOR PAHARI SECTION

हिंदी अनुभाग





अनुक्रमणिका: हिंदी अनुभाग

क्र. सं.	लेख / कविता का शीर्षक	लेखक का नाम एवं कक्षा	पृष्ठ संख्या
1	किताबें प्रेरणा	अंशिका (बी.ए. तृतीय वर्ष) कोमल (बी.ए. तृतीय वर्ष)	9
2	प्रेरक कहानी अनुभव	ईशा (बी.ए. तृतीय वर्ष) अंशिका (बी.ए. तृतीय वर्ष)	10
3	पर्यावरण (कविता) बचत का महत्व (कविता) छोटा-सा निवेश (कविता) अनुशासन की राह (कविता)	मीनाक्षी (बी.ए. तृतीय वर्ष) कोमल कुमारी (बी.ए. तृतीय वर्ष) मुस्कान (बी.ए. तृतीय वर्ष) पल्लवी (बी.ए. तृतीय वर्ष)	11
4	अच्छी प्रेजेंटेशन के लिए क्या करें? युवाओं पर सोशल मीडिया का प्रभाव लक्ष्य प्राप्ति की प्रक्रिया	गुंजन (बी.ए. द्वितीय वर्ष) संगीता कुमारी (सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र) कविता कुमारी (बी.ए. द्वितीय वर्ष)	12
5	अनुशासन का महत्व चुटकुले लोग क्या कहेंगे	ईशा (बी.ए. तृतीय वर्ष) सारिका (बी.कॉम. तृतीय वर्ष) मुस्कान (बी.कॉम. तृतीय वर्ष)	13
6	महाविद्यालय के अनुभव सीखने में बाधाएँ	अंशिका (बी.ए. तृतीय वर्ष) ईशा (बी.ए. तृतीय वर्ष)	14
7	संस्मरण: 'लोकहितं मम करणीयम्' कंफर्ट जोन: विकास की राह में सबसे बड़ी बाधा	संपादकीय मंडल संग्रह कोमल कुमारी (बी.ए. तृतीय वर्ष)	15
8	क्या सच में भूत होते हैं? — एक डर, कई भरम और विज्ञान की रोशनी	प्रो. संजीव कुमार (हिंदी विभाग)	16
9	मेरी कर्मभूमि, मेरा स्वाभिमान अंधेरे से उजाले की ओर: ध्यान और विज्ञान	सुमेर सिंह वरिष्ठ सहायक	17



किताबें

"पुस्तकें ज्ञान का अथाह सागर हैं।" यह कथन पूर्णतः सत्य है, क्योंकि पुस्तकें केवल जानकारी का स्रोत नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा देने वाली सच्ची मित्र भी हैं। आज के आधुनिक युग में जहाँ मोबाइल फोन और इंटरनेट का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है, वहीं पुस्तकों का महत्व पहले की अपेक्षा और भी अधिक हो गया है। एक विद्यार्थी के जीवन में पुस्तक अध्ययन सफलता की पहली सीढ़ी है। पुस्तकें हमारे व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इनके माध्यम से हमें विभिन्न विषयों —जैसे विज्ञान, इतिहास, साहित्य, राजनीति, संस्कृति और समाज—का गहन ज्ञान प्राप्त होता है। पुस्तकें हमें केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने में ही सहायता नहीं करतीं, बल्कि जीवन की वास्तविक चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा भी देती हैं। एक अच्छा विद्यार्थी वही होता है जो पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ सामान्य ज्ञान, प्रेरणादायक जीवनियाँ, उपन्यास तथा अन्य उपयोगी पुस्तकों का भी अध्ययन करता है। नियमित रूप से पुस्तकें पढ़ने से हमारी भाषा-शैली में सुधार होता है, शब्द-भंडार बढ़ता है तथा सोचने और समझने की क्षमता विकसित होती है। इसके साथ ही हमारी एकाग्रता, आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता भी मजबूत होती है। वर्तमान समय में अधिकांश विद्यार्थी अपना अधिक समय सोशल मीडिया और मनोरंजन के साधनों पर व्यतीत करते हैं। इससे अध्ययन की आदत कम होती जा रही है। यदि हम प्रतिदिन कुछ समय पुस्तक पढ़ने के लिए निकालें, तो यह न केवल हमारी शिक्षा को मजबूत करेगा बल्कि हमें अनुशासित, जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बनने में भी सहायता करेगा। पुस्तकें हमें महान व्यक्तियों के जीवन, उनके संघर्ष और उनकी सफलताओं से परिचित कराती हैं। इनसे हमें कठिन परिस्थितियों में धैर्य रखने, सकारात्मक सोच अपनाने और अपने लक्ष्य की ओर निरंतर प्रयास करने की प्रेरणा मिलती है। वास्तव में, पुस्तकें एक ऐसी अमूल्य धरोहर हैं जिनका ज्ञान कभी समाप्त नहीं होता।

Ansika
B.A. Third Year



प्रेरणा

मनुष्य के जीवन में सफलता केवल प्रतिभा या भाग्य पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उसके पीछे कार्य करने वाली सबसे बड़ी शक्ति प्रेरणा होती है। प्रेरणा वह ऊर्जा है जो हमें अपने लक्ष्य की ओर निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। विद्यार्थियों के जीवन में प्रेरणा का विशेष महत्व है, क्योंकि यही उन्हें कठिन परिस्थितियों में भी मेहनत करने और अपने सपनों को साकार करने का साहस देती है। प्रेरणा मुख्य रूप से दो प्रकार की होती है: आंतरिक प्रेरणा औरबाह्य प्रेरणा। आंतरिक प्रेरणा वह होती है जो हमारे भीतर से उत्पन्न होती है। जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को केवल अपनी रुचि, सीखने की इच्छा, आत्मसंतुष्टि या व्यक्तिगत विकास के लिए करता है, तो वह आंतरिक प्रेरणा से प्रेरित होता है। बाह्य प्रेरणा वह होती है जो बाहरी कारकों से प्राप्त होती है। इसमें पुरस्कार, प्रशंसा, अंक, पदोन्नति, प्रतियोगिता में जीत या दूसरों की सराहना जैसी बातें व्यक्ति को कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं।कॉलेज जीवन केवल परीक्षा पास करने तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह व्यक्तित्व निर्माण का भी महत्वपूर्ण समय होता है। यदि विद्यार्थी अपनी पढ़ाई, खेल, सांस्कृतिक गतिविधियों और सामाजिक कार्यों में आंतरिक प्रेरणा विकसित करें तथा बाह्य प्रेरणा का सकारात्मक उपयोग करें, तो वे न केवल शैक्षणिक बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार की प्रेरणाएँ जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बाह्य प्रेरणा हमें शुरुआत करने का उत्साह देती है, जबकि आंतरिक प्रेरणा हमें निरंतर आगे बढ़ने की शक्ति प्रदान करती है। इसलिए प्रत्येक विद्यार्थी को अपने भीतर सीखने की जिज्ञासा, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच विकसित करनी चाहिए। यही गुण उसे एक सफल विद्यार्थी, जिम्मेदार नागरिक और श्रेष्ठ इंसान बनने की दिशा में अग्रसर करेंगे।

Komal
B.A. Third Year



प्रेरक कहानी

कॉलेज के दूसरे वर्ष में पढ़ने वाला आदित्य हमेशा सोचता था कि उसके अंदर कोई विशेष प्रतिभा नहीं है। वह न तो कक्षा में सबसे आगे था, न ही किसी प्रतियोगिता में भाग लेने का साहस करता था। उसे लगता था कि सफलता केवल उन लोगों को मिलती है जो शुरू से ही प्रतिभाशाली होते हैं। एक दिन कॉलेज में भाषण प्रतियोगिता की घोषणा हुई। आदित्य के मित्रों ने उसे भी भाग लेने के लिए कहा, लेकिन उसने मना कर दिया। उसने कहा, "मैं अच्छा वक्ता नहीं हूँ। मैं सबके सामने बोलकर अपना मज़ाक नहीं बनवाना चाहता।" उसके शिक्षक ने उसकी बात सुनी और बोले, "सफल लोग हमेशा तैयार होकर शुरुआत नहीं करते, बल्कि शुरुआत करके खुद को तैयार करते हैं। पहला कदम छोटा हो सकता है, लेकिन वही आगे बढ़ने का रास्ता बनाता है।" ये शब्द आदित्य के मन में बस गए। उसने प्रतियोगिता में भाग लेने का निर्णय लिया। शुरुआत में वह मंच पर घबरा गया, उसकी आवाज़ काँप रही थी और कई गलतियाँ भी हुईं। लेकिन उसने हार नहीं मानी। उसने हर दिन आईने के सामने बोलने का अभ्यास किया, किताबें पढ़ीं और अपने शिक्षकों से सुझाव लिए। धीरे-धीरे उसका आत्मविश्वास बढ़ने लगा। कुछ महीनों बाद कॉलेज में एक बड़ी वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित हुई। इस बार आदित्य ने पूरे आत्मविश्वास के साथ मंच संभाला। उसने अपने विचार स्पष्टता और उत्साह के साथ प्रस्तुत किए। जब परिणाम घोषित हुए, तो आदित्य ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। यह उसके लिए केवल एक पुरस्कार नहीं था, बल्कि अपने डर पर मिली जीत थी। समारोह के बाद एक मित्र ने उससे पूछा, "तुम इतने कम समय में इतना बदलाव कैसे ला पाए?" आदित्य मुस्कुराया और बोला, "मैंने अपनी कमजोरी को अपनी पहचान नहीं बनने दिया। मैंने बस हर दिन खुद से एक छोटा-सा वादा किया—कल से बेहतर बनने का।" उस दिन आदित्य को समझ आया कि सफलता अचानक नहीं मिलती। वह छोटे-छोटे प्रयासों, धैर्य और आत्मविश्वास से धीरे-धीरे बनाई जाती है।

Isha
B.A. Third Year



अनुभव

कॉलेज जीवन केवल डिग्री प्राप्त करने का समय नहीं होता, बल्कि यह स्वयं को पहचानने और अपने व्यक्तित्व को विकसित करने का भी महत्वपूर्ण समय होता है। मेरे जीवन में एक ऐसा ही बदलाव तब आया, जब हमारे अर्थशास्त्र (Economics) के शिक्षक प्रो. तिलक शर्मा ने हमें आत्म-विकास (Self-Help) से जुड़ी पुस्तकों के सारांश पढ़ने की सलाह दी। शुरुआत में मुझे यह सुझाव सामान्य लगा। मुझे लगता था कि सफलता के लिए केवल विषयों की पढ़ाई और अच्छे अंक ही पर्याप्त हैं। लेकिन हमारे शिक्षक ने समझाया कि "ज्ञान केवल किताबों की जानकारी से नहीं, बल्कि जीवन को समझने से भी आता है।" उनके इन शब्दों ने मुझे प्रेरित किया और मैंने आत्म-विकास से संबंधित पुस्तकों के सारांश पढ़ना शुरू किया। धीरे-धीरे यह मेरी आदत बन गई। मैंने अलग-अलग विषयों पर आधारित 150 से अधिक पुस्तकों के सारांश पढ़े, जिनमें समय प्रबंधन, सकारात्मक सोच, लक्ष्य निर्धारण, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, आत्मविश्वास और सफलता के सिद्धांतों के बारे में जानकारी मिली। इन पुस्तकों से मुझे सबसे बड़ी सीख यह मिली कि हमारी सफलता बाहरी परिस्थितियों से अधिक हमारी सोच और आदतों पर निर्भर करती है। पहले मैं कई बार काम को टाल देता था और छोटी-छोटी असफलताओं से निराश हो जाता था। लेकिन इन पुस्तकों से मैंने सीखा कि असफलता सीखने का अवसर होती है, न कि रुक जाने का कारण। समय प्रबंधन पर पढ़ी गई पुस्तकों ने मुझे अपने दिन की बेहतर योजना बनाना सिखाया। अब मैं अपने लक्ष्य पहले से निर्धारित करता हूँ और उन्हें छोटे-छोटे चरणों में पूरा करने का प्रयास करता हूँ। सकारात्मक सोच से जुड़ी पुस्तकों ने मुझे समस्याओं को नए दृष्टिकोण से देखना सिखाया। इन पुस्तकों का प्रभाव केवल मेरी पढ़ाई तक सीमित नहीं रहा, बल्कि मेरे व्यवहार और व्यक्तित्व में भी बदलाव आया। मेरा आत्मविश्वास बढ़ा, निर्णय लेने की क्षमता बेहतर हुई और मैंने अपने भविष्य के प्रति अधिक गंभीरता से सोचना शुरू किया। इस पूरी यात्रा में मेरे अर्थशास्त्र शिक्षक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण रही। उन्होंने हमें केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रखा, बल्कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक सोच विकसित करने का मार्ग दिखाया। उनके एक छोटे-से सुझाव ने मेरे विचारों को नई दिशा दी। मेरे अनुभव के अनुसार, हर विद्यार्थी को अपने पाठ्यक्रम की पुस्तकों के साथ-साथ ऐसी पुस्तकों को भी पढ़ना चाहिए जो उसके व्यक्तित्व और सोच को विकसित करें। एक अच्छी पुस्तक हमारे जीवन में एक अच्छे मार्गदर्शक की तरह होती है।

Ansika
B.A. Third Year



पर्यावरण

हरा-भरा हो अपना आँगन,
महके हर दिन प्यारा जीवन।
पेड़ लगाएँ, जल बचाएँ,
धरती माँ का मान बढ़ाएँ।
स्वच्छ हवा का लें हम वचन,
प्रकृति है जीवन का दर्पण।
आज बचाएँ हरियाली हम,
कल मुस्काएगा यह आलम।
नदियाँ निर्मल, नभ हो नीला,
हर चेहरा फिर लगे रंगीला।
आओ मिलकर कदम बढ़ाएँ,
स्वच्छ, सुरक्षित भारत बनाएँ।

Minakshi
B.A. Third Year

बचत का महत्व



बूँद-बूँद से सागर भरता,
पैसा-पैसा भविष्य सँवरता।
आज बचाओ, कल मुस्काओ,
सपनों को सच कर दिखलाओ।
बचत केवल धन नहीं होती,
यह जीवन की सच्ची ज्योति।
समझदारी की यही निशानी,
बचत से बढ़ती खुशहाली।

Komal Kumari
B.A. Third Year

छोटा-सा निवेश



आज का छोटा-सा निवेश,
कल बनेगा जीवन विशेष।
मेहनत, ज्ञान और धैर्य जोड़ो,
सफलता के सपनों को मोड़ो।
हर बचाया छोटा धन,
बनता है उज्ज्वल भविष्य का वन।
सोच-समझकर कदम बढ़ाएँ,
निवेश से खुशहाली पाएँ।
धन ही नहीं, ज्ञान में निवेश करो,
हर दिन खुद को और बेहतर करो।
आज की सही तैयारी ही,
कल की सबसे बड़ी जीत बनेगी।

Muskan
B.A. Third Year

अनुशासन की राह

अनुशासन जीवन की शान,
यही दिलाए सच्चा मान।
समय का जो रखे सम्मान,
सफल बने हर उसका काम।
मेहनत से जो राह बनाए,
सपनों को सच कर दिखलाए।
अनुशासन है जीवन का धन,
यही बनाता श्रेष्ठ मानव-जन।
हर दिन इसका साथ निभाएँ,
उज्ज्वल भविष्य स्वयं बनाएँ।

Pallavi
B.A. Third Year



अच्छी प्रेजेंटेशन के लिए क्या करें?

कॉलेज जीवन में प्रस्तुति (Presentation) केवल अंकों के लिए नहीं, बल्कि अपने विचारों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने की कला सीखने का अवसर भी होती है। एक अच्छी प्रस्तुति श्रोताओं का ध्यान आकर्षित करती है और हमारे आत्मविश्वास को भी बढ़ाती है। प्रभावी प्रस्तुति देने के लिए सबसे पहले विषय की अच्छी तैयारी आवश्यक है। जिस विषय पर बोलना है, उसे अच्छी तरह समझें और मुख्य बिंदुओं को सरल भाषा में व्यवस्थित करें। प्रस्तुति के दौरान आत्मविश्वास बनाए रखें, स्पष्ट और संतुलित आवाज़ में बोलें तथा श्रोताओं से आँखों का संपर्क बनाए रखें। इससे वे आपकी बात से अधिक जुड़ाव महसूस करते हैं। यदि स्लाइड्स का उपयोग कर रहे हों, तो उनमें अधिक शब्दों के बजाय मुख्य बिंदु, चित्र और आवश्यक आँकड़े शामिल करें। प्रस्तुति को रोचक बनाने के लिए छोटे उदाहरण, प्रेरक प्रसंग या वास्तविक जीवन की घटनाओं का उपयोग किया जा सकता है। समय का ध्यान रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि संक्षिप्त और सारगर्भित प्रस्तुति अधिक प्रभाव छोड़ती है। अंत में, प्रश्नों का उत्तर शांतिपूर्वक और विनम्रता से दें। यदि किसी प्रश्न का उत्तर न पता हो, तो स्वीकार करना और बाद में जानकारी देने का आश्वासन देना बेहतर होता है। प्रभावी प्रस्तुति केवल बोलने की कला नहीं, बल्कि तैयारी, आत्मविश्वास, स्पष्ट अभिव्यक्ति और श्रोताओं से जुड़ने की क्षमता का सुंदर समन्वय है। नियमित अभ्यास से कोई भी विद्यार्थी एक प्रभावशाली प्रस्तुतकर्ता बन सकता है।

Gunjan
B.A. Second Year

युवाओं पर सोशल मीडिया का प्रभाव



आज के आधुनिक युग में सोशल मीडिया हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है, विशेष रूप से युवाओं के लिए। Instagram, YouTube, Facebook और WhatsApp जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म युवाओं को अपने दोस्तों और परिवार से जुड़े रहने, विचार साझा करने और नई चीजें सीखने का अवसर देते हैं। सोशल मीडिया शिक्षा और जानकारी का भी एक अच्छा माध्यम है। युवा इससे शैक्षणिक वीडियो देखकर, नई भाषाएँ और कौशल सीखकर तथा देश-दुनिया की जानकारी प्राप्त करके अपने ज्ञान को बढ़ा सकते हैं। "इंटरनेट एक शक्तिशाली साधन है; इसका उपयोग हम किस प्रकार करते हैं, यह हमारे ऊपर निर्भर करता है।" हालाँकि, सोशल मीडिया के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी हैं। लगातार अधिक समय तक सोशल मीडिया का उपयोग करने से पढ़ाई में ध्यान कम हो सकता है और शारीरिक गतिविधियों के लिए समय कम हो सकता है। युवाओं को गलत जानकारी, साइबर बुलिंग और दूसरों से अपनी तुलना करने जैसी समस्याओं का भी सामना करना पड़ सकता है। कई बार लाइक, कमेंट और फॉलोअर्स पाने की इच्छा युवाओं पर अनावश्यक दबाव डालती है। इसलिए सोशल मीडिया का उपयोग समझदारी और जिम्मेदारी से करना बहुत आवश्यक है। "तकनीक हमारी सेवक होनी चाहिए, हमारी स्वामी नहीं।" सोशल मीडिया युवाओं की सोच, व्यवहार और संवाद करने के तरीके को भी प्रभावित करता है। वे जो सामग्री देखते हैं और जिन लोगों को फॉलो करते हैं, उनका उनके विचारों और आदतों पर प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए किसी भी जानकारी पर विश्वास करने या उसे आगे साझा करने से पहले उसकी सत्यता जाँचनी चाहिए। साथ ही, युवाओं को ऑनलाइन दुनिया और वास्तविक जीवन के बीच संतुलन बनाए रखना चाहिए। "सोशल मीडिया से दुनिया से जुड़ें, लेकिन अपने आसपास के लोगों से जुड़ना न भूलें।"

संगीता कुमारी
सहायक प्राध्यापक सामाजशास्त्र



लक्ष्य प्राप्ति की प्रक्रिया

जीवन में हर व्यक्ति का कोई न कोई लक्ष्य अवश्य होता है। कोई डॉक्टर बनना चाहता है, कोई शिक्षक, वैज्ञानिक या सफल उद्यमी। लेकिन केवल लक्ष्य निर्धारित कर लेना ही पर्याप्त नहीं है, उसे प्राप्त करने के लिए सही प्रक्रिया अपनाना भी उतना ही आवश्यक है। लक्ष्य प्राप्ति की पहली सीढ़ी है स्पष्ट लक्ष्य निर्धारण। जब हमें यह पता होता है कि हमें कहाँ पहुँचना है, तभी हम सही दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। इसके बाद उस लक्ष्य को छोटे-छोटे चरणों में बाँटना चाहिए, ताकि उसे प्राप्त करना आसान हो जाए। दूसरा महत्वपूर्ण कदम है नियमित मेहनत और अनुशासन। सफलता एक दिन में नहीं मिलती, बल्कि निरंतर प्रयास, समय का सदुपयोग और धैर्य से प्राप्त होती है। कठिनाइयाँ और असफलताएँ इस यात्रा का स्वाभाविक हिस्सा हैं। उनसे घबराने के बजाय हमें उनसे सीख लेकर आगे बढ़ना चाहिए। सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास भी लक्ष्य प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि हम स्वयं पर विश्वास रखते हैं और हर दिन पहले से बेहतर बनने का प्रयास करते हैं, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं रहता। अंततः, सफलता केवल मंज़िल तक पहुँचने का नाम नहीं है, बल्कि उस यात्रा का भी नाम है जो हमें अधिक सक्षम, अनुशासित और आत्मविश्वासी बनाती है। इसलिए हर विद्यार्थी को बड़े सपने देखने के साथ-साथ उन्हें पूरा करने के लिए सही योजना, निरंतर प्रयास और दृढ़ संकल्प को अपना साथी बनाना चाहिए।

Kavita Kumari
B.A. Second Year

अनुशासन का महत्व

जीवन में अनुशासन का महत्व केवल व्यक्तिगत सफलता तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सुसंस्कृत समाज और राष्ट्र के निर्माण की भी सबसे बड़ी शर्त है। अनुशासन का शाब्दिक अर्थ है—नियमों और मर्यादाओं के भीतर रहकर आचरण करना। यह कोई बाहरी बंधन नहीं है, बल्कि यह अंतरात्मा से उपजी वह शक्ति है जो मनुष्य को उसके कर्तव्यों के प्रति सचेत रखती है। किसी भी क्षेत्र में शिखर पर पहुँचने वाले व्यक्तियों के जीवन का गहराई से अध्ययन किया जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि उनकी सफलता के पीछे प्रतिभा से अधिक उनके कठोर अनुशासन का हाथ होता है। सुबह समय पर उठने से लेकर अपने दैनिक कार्यों की रूपरेखा तय करना और कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखना अनुशासन के ही विभिन्न रूप हैं। इसके अभाव में मनुष्य की ऊर्जा दिशाहीन हो जाती है और वह अपने लक्ष्यों से भटक जाता है। अनुशासित जीवनशैली न केवल बाहरी कार्यों को व्यवस्थित करती है, बल्कि आंतरिक मानसिक शांति भी प्रदान करती है। जिस व्यक्ति का जीवन व्यवस्थित होता है, उसके मन में असमंजस और तनाव की स्थिति कम उत्पन्न होती है। वह अपने समय का सही प्रबंधन करना सीख जाता है, जिससे काम का बोझ और अनावश्यक दबाव अपने आप कम हो जाता है। व्यक्तिगत जीवन से आगे बढ़कर, अनुशासन सामाजिक समरसता और राष्ट्र की उन्नति का भी आधार है। सड़क पर यातायात के नियमों का पालन करना हो, कार्यालय में अपने दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करना हो या सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना हो—यह सब अनुशासित नागरिक के लक्षण हैं। जिस देश के नागरिक अनुशासित होते हैं, वह देश हर क्षेत्र में तीव्र गति से प्रगति करता है।

Isha
B.A. Third Year



चुटकुले



डॉक्टर और मरीज
मरीज: डॉक्टर साहब, जब मैं सोता हूँ, तो मुझ अजीब-अजीब सपने आते हैं। कभी लगता है कि मैं फुटबॉल खेल रहा हूँ, तो कभी लगता है कि मैं रेस जीत गया हूँ। डॉक्टर: कोई बात नहीं, यह गोली रात को सोने से पहले खा लेना। मरीज: कल से खाऊँगा साहब, आज रात मेरा फाइनल मैच है!

टीचर और स्टूडेंट
टीचर: संता, तुम यह बताओ कि इतिहास से हमें क्या शिक्षा मिलती है? संता: सर, इतिहास से हमें यह शिक्षा मिलती है कि इतिहास से आज तक किसी ने कोई शिक्षा नहीं ली! (टीचर साहब बेहोश!)

टीचर और पप्पू
टीचर: पप्पू, अगर तुम्हें होमवर्क करने में कोई दिक्कत आए, तो मुझसे बेझिझक पूछ लिया करो। पप्पू: सर, मुझे तो कल वाले आपके होमवर्क में ही बहुत बड़ी दिक्कत आ रही है। टीचर: कौन सी दिक्कत बेटा? पूछो। पप्पू: दिक्कत यह है सर कि वो होमवर्क मैंने अभी तक किया ही नहीं है!

होटल का वेटर और ग्राहक
ग्राहक: वेटर! इस सूप में मक्खी क्या कर रही है? वेटर (कान के पास हाथ लगाकर ध्यान से सुनते हुए): लगता है साहब, वो तैरना सीख रही है!

Sarika
B.Com. Third Year

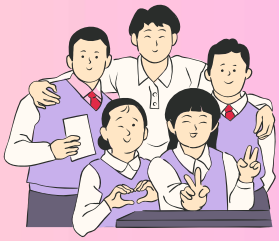
लोग क्या कहेंगे

एक कहावत है-कि "सबसे बड़ा रोग, क्या कहेंगे लोग।" सच्चाई तो यह है कि समाज का यह तथाकथित दायरा कभी किसी से संतुष्ट हुआ ही नहीं है। आप कुछ भी कर लें, लोग आलोचना करने के लिए हमेशा तैयार मिलेंगे। यदि आप सफल होते हैं, तो लोग आपकी सफलता के पीछे किस्मत का रोना रोएंगे; यदि आप असफल होते हैं, तो वे आपका मजाक बनाएंगे।जब लोगों का काम ही बोलना है, तो फिर उनके डर से अपनी खुशियों की बलि क्यों दी जाए? जिंदगी बहुत छोटी है और इसे समाज के डर में गुजार देना सबसे बड़ी नादानी है। जिस दिन इंसान यह समझ जाता है कि "दूसरों की नजर में सही दिखने से ज्यादा खुद की नजर में सही होना जरूरी है", उसी दिन से वह खुलकर जीना सीख जाता है। अगली बार जब आपके मन में यह सवाल आए कि "लोग क्या कहेंगे?", तो खुद से पूछिए— "क्या लोग मेरा जीवन जीएंगे?" जवाब आपको अपने आप मिल जाएगा।

Muskan
B.Com. Third Year

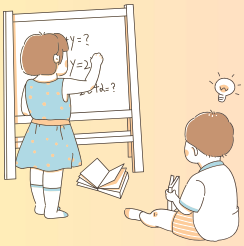


महाविद्यालय के अनुभव



महाविद्यालय का जीवन हर विद्यार्थी के लिए यादगार होता है, लेकिन एक ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने वाले छात्र के लिए यह अनुभव और भी अधिक सीख देने वाला होता है। गाँव की सरल जीवनशैली से निकलकर जब मैंने कॉलेज में प्रवेश लिया, तब मेरे जीवन का एक नया अध्याय शुरू हुआ। शुरुआत में शहर के वातावरण और कॉलेज की नई दुनिया को अपनाना आसान नहीं था। नए मित्र, नए शिक्षक और नई पढ़ाई की पद्धति मेरे लिए चुनौतीपूर्ण थी। गाँव के सरकारी विद्यालय से पढ़ाई करने के कारण शुरुआत में मुझे भाषा और आत्मविश्वास से जुड़ी कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। लेकिन मैंने कभी हार नहीं मानी। अपने शिक्षकों के मार्गदर्शन और मित्रों के सहयोग से धीरे-धीरे मैं हर चुनौती का सामना करने लगा। कॉलेज ने मुझे केवल किताबों का ज्ञान ही नहीं दिया, बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाई। मैंने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों, भाषण प्रतियोगिताओं और खेलकूद जैसी गतिविधियों में भाग लिया। इन अनुभवों ने मेरे व्यक्तित्व को निखारा और मुझे आत्मविश्वासी बनाया। ग्रामीण परिवेश से आने के कारण मैं मेहनत, सादगी और अनुशासन को अपने जीवन का हिस्सा मानता हूँ। कॉलेज में भी मैंने इन मूल्यों को बनाए रखा। कई बार आर्थिक कठिनाइयों और लंबी यात्रा जैसी समस्याएँ भी आईं, लेकिन परिवार के सहयोग और अपने दृढ़ संकल्प के कारण मैंने अपनी पढ़ाई जारी रखी। इन संघर्षों ने मुझे धैर्य, आत्मनिर्भरता और जिम्मेदारी का महत्व सिखाया। कॉलेज के दिनों में बने मित्र आज भी मेरे जीवन की सबसे बड़ी पूँजी हैं। हमने साथ मिलकर पढ़ाई की, कठिन समय में एक-दूसरे का साथ दिया और अनेक यादगार पल साझा किए। शिक्षकों का स्नेह और मार्गदर्शन भी हमेशा प्रेरणा का स्रोत रहा। आज जब मैं अपने महाविद्यालय के दिनों को याद करता हूँ, तो गर्व और खुशी का अनुभव होता है। यह समय केवल शिक्षा प्राप्त करने का नहीं था, बल्कि स्वयं को पहचानने, नए सपने देखने और उन्हें पूरा करने की दिशा में पहला कदम बढ़ाने का समय था। एक ग्रामीण छात्र होने के नाते मुझे अपनी जड़ों पर गर्व है, और मेरा विश्वास है कि गाँव का कोई भी विद्यार्थी मेहनत, लगन और आत्मविश्वास के बल पर जीवन में बड़ी से बड़ी सफलता प्राप्त कर सकता है।

Ansika
B.A. Third Year



सीखने में बाधाएँ

मेरा मानना है कि प्रत्येक विद्यार्थी में सीखने की क्षमता होती है, किंतु अनेक कारण उसके सीखने में बाधा उत्पन्न करते हैं। सीखने की प्रमुख बाधाओं में आर्थिक कठिनाइयाँ, पारिवारिक समस्याएँ, भाषा संबंधी कठिनाइयाँ, आत्मविश्वास की कमी, सीखने की प्रेरणा का अभाव, अनियमित उपस्थिति तथा संसाधनों की कमी शामिल हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को विशेष रूप से डिजिटल संसाधनों, गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री और शैक्षिक मार्गदर्शन की सीमित उपलब्धता जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त, अत्यधिक भीड़ वाली कक्षाएँ, विद्यार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नताओं की उपेक्षा तथा पारंपरिक शिक्षण विधियाँ भी प्रभावी सीखने में बाधक बन सकती हैं। इन चुनौतियों का समाधान शिक्षक, अभिभावक और विद्यालय के सामूहिक प्रयासों से ही संभव है। यदि विद्यार्थियों को प्रोत्साहन, अनुकूल शिक्षण वातावरण, आधुनिक शिक्षण विधियाँ तथा आवश्यक शैक्षिक संसाधन उपलब्ध कराए जाएँ, तो वे इन बाधाओं को पार कर अपनी क्षमताओं का पूर्ण विकास कर सकते हैं। इसलिए एक संवेदनशील शिक्षक तथा शैक्षिक संस्थान का दायित्व केवल ज्ञान प्रदान करना ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों की सीखने संबंधी कठिनाइयों को पहचानकर उनका उचित समाधान भी करना है।

Isha
B.A. Third Year



'लोकहितं मम करणीयम्'



"लोकहितं मम करणीयम्' ये शब्द विद्यार्थियों को सबोधित करते हुए श्री अशोक रैना जी ने कहे थे। उन्होंने ये शब्द लड़ भडोल क्षेत्र के साथियों के नि:स्वार्थ भाव व सेवा के लिए कहे थे परंतु उनका प्रति वर्ष विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी की शाखा कांगड़ा द्वारा आयोजित विद्यालय तथा महाविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए आयोजित परीक्षा के दौरन महाविद्यालय में आना श्लोक को सार्थक भी करता है। वर्ष 2004 में कांगड़ा से शुरू हुई इस प्रतियोगिता को साल 2013 में जिला मंडी के चौंतड़ा स्कूल में साल 2017 से डिग्री कॉलेज लड भडोल में हजारों विद्यार्थी इसका लाभ ले चुके हैं। लोकहितं मम करणीयम्' का सीधा और मुख्य अर्थ है — "मुझे संसार का कल्याण (भलाई) करना चाहिए। "यह प्रसिद्ध श्लोक संस्कृत साहित्य का एक अत्यंत प्रेरणादायक गीत है, जो मनुष्य को स्वार्थ से ऊपर उठकर परोपकार और समाज सेवा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। यह श्लोक सिखाता है कि जब व्यक्ति का मन, वचन और कर्म (सोच, बोलना और करना) तीनों समाज के कल्याण केलिए समर्पित हो जाते हैं, तब वह व्यक्ति सच्चे अर्थों में मानव कहलाता है। यह हमें सिखाता है कि "परोपकार ही सबसे बड़ा धर्म है"। श्री अशोक रैना जी का परीक्षा के दौरान महाविद्यालय के प्रांगण में उपस्थित होना, छात्रों के उत्साह को दोगुना कर देता है। उनका युवाओं से सीधा संवाद इस श्लोक को पूरी तरह सार्थक करता है। वह केवल एक मार्गदर्शक नहीं, बल्कि एक ऐसे कर्मयोगी हैं जो नई पीढ़ी को राष्ट्र निर्माण के लिए प्रेरित कर रहे हैं। स्थानीय स्कूलों के अध्यापक, प्रधानाचार्य, सभी सहयोगी, मुख्य अध्यापक, प्रिंसिपल और स्थानीय लोगों के सहयोग ने यह साबित कर दिया है कि जब सामूहिक प्रयास और दृढ़ संकल्प एक साथ मिलते हैं, तो राष्ट्र निर्माण का मार्ग स्वतः ही प्रशस्त हो जाता है। श्री अशोक रैना जी के नेतृत्व और स्थानीय शिक्षाविदों के सहयोग से चल रहा यह अभियान आने वाले समय में भी युवा पीढ़ी का मार्गदर्शन करता रहेगा।

संस्मरण

कंफर्ट जोन: विकास की राह में सबसे बड़ी बाधा

'कंफर्ट जोन' (Comfort Zone) या 'सुविधा क्षेत्र' व्यक्ति की वह मानसिक और व्यावहारिक स्थिति है, जहाँ वह खुद को पूरी तरह सुरक्षित, तनावमुक्त और सहज महसूस करता है। इस दायरे के भीतर, इंसान केवल उन्हीं कामों को करता है जिनसे वह अच्छी तरह परिचित होता है। यहाँ न तो कोई नया जोखिम होता है और न ही किसी प्रकार की अनिश्चितता। इस स्थिति में मस्तिष्क को बहुत कम ऊर्जा खर्च करनी पड़ती है, जिससे व्यक्ति को एक छद्म शांति और सुरक्षा का अहसास होता है। उदाहरण के लिए, एक ही ढर्रे की नौकरी करते रहना, नए लोगों से मिलने से कतराना या किसी नई कला को सीखने के डर से पीछे हट जाना—यह सब कंफर्ट जोन के ही लक्षण हैं। भले ही कंफर्ट जोन तात्कालिक रूप से मानसिक सुकून देता है, लेकिन दीर्घकालिक रूप से यह हमारी क्षमता और व्यक्तिगत विकास का सबसे बड़ा दुश्मन है। एक प्रसिद्ध कहावत है, "कंफर्ट जोन एक खूबसूरत जगह तो है, लेकिन वहाँ कभी कुछ उगता नहीं है।" इसका सीधा अर्थ यह है कि इस दायरे में रहकर व्यक्ति कभी अपनी वास्तविक क्षमता (Potential) को नहीं पहचान पाता। जब हम कोई चुनौती स्वीकार नहीं करते, तो हमारा सीखना बंद हो जाता है। जीवन में जड़ता आ जाती है और हम एक ही जगह ठहर जाते हैं। दुनिया तेजी से बदल रही है, और इस बदलती दुनिया में खुद को न बदलना या नया न सीखना अंततः हमें दूसरों से बहुत पीछे छोड़ देता है। इतिहास गवाह है कि दुनिया के जितने भी महान वैज्ञानिक, उद्यमी, लेखक या लीडर हुए हैं, उन्होंने अपनी सफलता की कहानी कंफर्ट जोन से बाहर निकलकर ही लिखी है। यदि थॉमस एडिसन या राइट ब्रदर्स ने असफलताओं के डर से अपने सुरक्षित दायरे को न छोड़ा होता, तो आज दुनिया के पास बिजली का बल्ब या हवाई जहाज नहीं होता। कंफर्ट जोन से बाहर निकलने का मतलब यह नहीं है कि आप तुरंत कोई बहुत बड़ा या जानलेवा जोखिम उठा लें। इसका मतलब है 'लर्निंग जोन' (Learning Zone) में प्रवेश करना। जब आप पहली बार स्टेज पर बोलने जाते हैं, कोई नई भाषा सीखते हैं, या किसी नए शहर में अकेले रहने जाते हैं, तो शुरुआत में घबराहट और तनाव (Anxiety) होना स्वाभाविक है। लेकिन यही वह समय होता है जब आपका मस्तिष्क नए न्यूरॉन कनेक्शन बनाता है और आप भीतर से मजबूत बनते हैं। कंफर्ट जोन को तोड़ने के लिए किसी बड़े धमाके की जरूरत नहीं होती, बल्कि छोटे और निरंतर प्रयासों की आवश्यकता होती है। आप रोज़मर्रा की ज़िंदगी में छोटे बदलावों से शुरुआत कर सकते हैं। जैसे—सुबह जल्दी उठना, किसी नए विषय पर किताब पढ़ना, अपने से अलग विचार रखने वाले लोगों से बात करना या अपने काम को करने का तरीका बदलना। ये छोटे-छोटे कदम आपके आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं। धीरे-धीरे, जो चीजें आपको पहले डराती थीं, वे आपके नए कंफर्ट जोन का हिस्सा बन जाती हैं और आपका दायरा बड़ा हो जाता है।

Komal Kumari B.A. Third Year



क्या सच में भूत होते हैं? — एक डर, कई भरम और विज्ञान की रोशनी

गाँव में किसी शादी या पारिवारिक आयोजन में जब लोग जुटते हैं, तो रस्मों और खाने के बीच का खाली वक्त अक्सर महफ़िलों में बदल जाता है। कुर्सियों पर बैठकर इंतज़ार करते-करते जब गप्पों का दौर शुरू होता है, तो बातों की सुई न जाने कैसे घूम-फिरकर भूत-प्रेतों और अनहोनी घटनाओं पर आ टिकती है। कोई अपनी पुरानी बाइक के अचानक सुनसान मोड़ पर बंद होने का किस्सा सुनाने लगता है, तो कोई खेत की मेड़ पर सफेद साया देखने की कसम खाने लगता है। किसी को पीपल के नीचे अजीबोगरीब आवाज़ सुनाई देती है.बचपन की उम्र भी ऐसी होती है कि जो सुनो, वही सच लगने लगता है। बड़ों के मुंह से निकली इन बातों ने मेरे बालमन में यह वहम पक्का कर दिया था कि अंधेरा होते ही कोई रहस्यमयी दुनिया सक्रिय हो जाती है। उस दौर में गले का ताबीज ही अनजाने खतरों से बचने का सबसे बड़ा सहारा लगता था। समय बीता और गाँव से निकलकर मैं शहर के कॉलेज हॉस्टल आ पहुँचा। हाथों में पुरानी कहानियों की जगह विज्ञान की किताबें आ गईं, पर मन के किसी भीतरी कोने में बचपन का वह डर अब भी चुपचाप सांस ले रहा था।

एक रात की बात है। घड़ी में दो बज रहे थे। कमरे में टेबल लैंप जल रहा था और बाहर गहरा सन्नाटा था। अचानक खिड़की का भारी पर्दा जोर-जोर से फड़फड़ाने लगा। लगा जैसे कमरे का तापमान अचानक गिर गया हो। रीढ़ में एक ठंडी सिहरन दौड़ी और बरसों पुरानी सुनी-सुनाई बातें आँखों के आगे तैरने लगीं। घबराहट में मैंने तुरंत अपने रूममेट रवि को जगाया। रवि ने मेरी हालत देखी तो मुस्कुरा दिया। वह सीधा खिड़की के पास गया, पर्दा हटाया और सिटकनी दिखाते हुए बोला, "अरे भाई! खिड़की की कुंडी ढीली है। बाहर तेज हवा चल रही है और वही झोंका दरार से अंदर आकर पर्दा हिला रहा है। जिसे तुम किसी रूह की ठंडी सांस समझ रहे थे, वह सिर्फ मौसम का असर है!" डर की एक परत तो हटी, पर भरम इतनी जल्दी कहाँ मिटता है! अगली रात देर तक पढ़ाई करने के बाद जब मैंने लाइट बंद की और सोने के लिए बिस्तर पर लेटा, तभी नज़र अलमारी के कोने पर टिक गई। घने अंधेरे में एक लंबा, काला साया सिर झुकाए खड़ा दिखा। ऐसा लगा मानो वह टकटकी लगाए मुझे ही देख रहा हो। मेरी घिग्घी बंध गई। मैंने कांपते हाथों से रवि को उठाया। रवि ने तुरंत उठकर लाइट जला दी। उजाला होते ही सच सामने था—कुर्सी की पीठ पर मेरी ही काली जैकेट लटकी थी और उसके ऊपर गोल टोपी रखी हुई थी। रवि ठहाका मारकर बोला, "इसे विज्ञान में 'पैरीडोलिया' कहते हैं। हमारा दिमाग अस्पष्ट और अधूरी आकृतियों में खुद-ब-खुद जाने-पहचाने चेहरे या इंसानी रूप तलाशने लगता है। अंधेरे में डर हो, तो दिमाग सबसे पहले भूत ही गढ़ता है।"

कुछ दिन बाद एक और घटना घटी। रात को अचानक मेरी आँख खुली। लगा कमरे में कोई साया खड़ा है; मैं भागना चाहता था, चिल्लाना चाहता था, लेकिन शरीर जैसे सुन्न पड़ गया था। छाती पर भारी दबाव था और दम घुटने लगा। सुबह बदहवास हालत में मैंने रवि को यह बात बताई। रवि ने संजीदगी से समझाया, "यह कोई साया नहीं, बल्कि 'स्लीप पैरालिसिस' है। गहरी नींद से अचानक जागने पर कभी-कभी दिमाग की चेतना लौट आती है, लेकिन मांसपेशियों का तालमेल कुछ सेकंड के लिए सोता रहता है। उस बीच घबराहट के कारण मतिभ्रम यानी हैलुसिनेशन होने लगता है और छाती पर भारीपन महसूस होता है।" वहम का सिलसिला यहीं नहीं रुका। एक रात हॉस्टल के पिछले हिस्से से किसी बच्चे के जोर-जोर से रोने और चीखने की आवाजें आने लगीं। सन्नाटे में वह आवाज इतनी अजीब थी कि पूरे हॉस्टल में दहशत फैल गई। लड़के कमरों में दुबक गए और अफवाह उड़ गई कि वहां कोई चुड़ैल भटक रही है। लेकिन इस बार रवि और कुछ लड़कों ने हिम्मत दिखाई। सबने मोबाइल की फ्लैशलाइट जलाई और आवाज की दिशा में बढ़े। रोशनी पड़ते ही सारा माजरा साफ हो गया—झाड़ियों में दो बिल्लियां आमने-सामने खड़ी गुर्रा रही थीं। रवि ने बताया कि इलाके की लड़ाई या संसर्ग के दौरान बिल्लियों की चीख बिल्कुल इंसानी बच्चे के रोने जैसी लगती है, जिसे लोग भूत मान बैठते हैं। इसके कुछ ही दिनों बाद हॉस्टल की पुरानी खंडहरनुमा बिल्डिंग से आधी रात को दिल दहलाने वाली आवाजें आने लगीं—"चींऽऽऽ... कर्रर्र... हूँऽऽऽ..." कभी लगता कोई दर्द से कराह रहा है, तो कभी लोहे पर नाखून घिसने जैसी आवाज आती। पूरी बिल्डिंग में दहशत का माहौल बन गया कि वहां कोई अतृप्त आत्मा आ गई है। रवि टॉर्च और पेचकस लेकर उस बंद हिस्से में घुस गया। छत पर रोशनी डाली तो सारा रहस्य खुल गया। वेंटिलेशन के लिए लगा एक पुराना, जंग लगा भारी पंखा तेज हवा के दबाव से उल्टी दिशा में घूम रहा था। उसकी सूखी, बिना ग्रीस की धुरी से लोहे के रगड़ने की वही कराह निकल रही थी। रवि ने उसकी धुरी में थोड़ा सा तेल डाला और वह 'आत्मा' हमेशा के लिए खामोश हो गई।

अगले दिन कॉलेज के सेमिनार में प्रोफेसर साहब की बात ने पूरी तस्वीर साफ कर दी। उन्होंने कहा, "अज्ञान ही हर डर की जड़ है। जब तक किसी घटना का प्राकृतिक कारण समझ नहीं आता, लोग उसे पराशक्तियों से जोड़ देते हैं। जेम्स रैंडी फाउंडेशन से लेकर अंधश्रद्धा निर्मूलन समितियों तक ने अलौकिक शक्तियों को साबित करने पर करोड़ों के इनाम रखे हैं, लेकिन आज तक कोई तांत्रिक इसे साबित नहीं कर पाया। अगर भूतों में सचमुच दम होता, तो देशों को सीमाओं पर सुरक्षा बल तैनात करने की क्या जरूरत थी? हम भूतों की सेना बनाकर भेज देते!" महीने भर बाद, देर रात खिड़की के बाहर फिर एक सफेद आकृति हवा में लहराती दिखी। इस बार दिल धड़का नहीं, पैर भागे नहीं। मैंने चुपचाप टॉर्च जलाई और बाहर देखा। छत की मुंडेर पर बंधी डोरी पर किसी छात्र का सफेद तौलिया हवा में उड़ रहा था। मैं अपनी पुरानी नासमझी पर खुद ही हंस पड़ा। उस रात यह सच्चाई साफ हो गई कि भूत किसी पेड़ या पुरानी इमारतों में नहीं, बल्कि इंसान की अज्ञानता और डरे हुए दिमाग की परछाइयों में रहते हैं। ढोंगी तांत्रिक इसी वहम का फायदा उठाते हैं। लेकिन जहाँ तर्क, जांच-पड़ताल और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उजाला होता है, वहाँ डर का कोई भूत टिक नहीं पाता।

प्रो. संजीव कुमार
हिंदी विभाग

मेरी कर्मभूमि, मेरा स्वाभिमान

लड भड़ोल की वादियों में, एक नया मुक़ाम मिला,
कर्मभूमि के इस प्रांगण में, सेवा का पैग़ाम मिला।

काग़ज़, क़लम और फ़ाइलों में, ढलती है हर रोज़ सहर,
ज़िम्मेदारी के इस सफ़र में, नाम और एहतराम मिला।

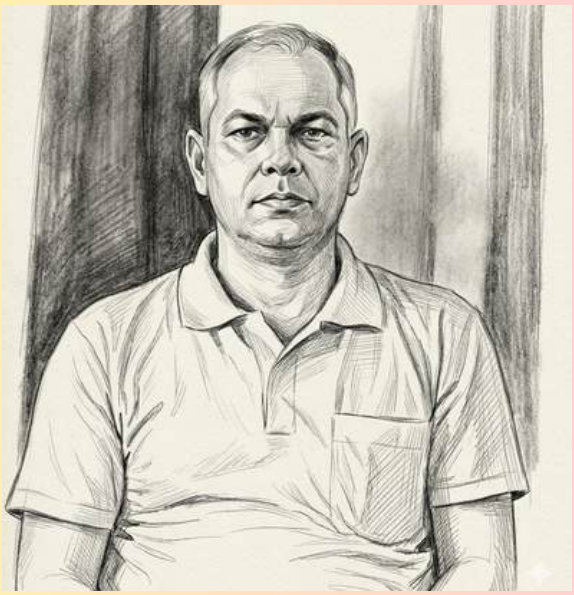
छात्रों की हर एक उलझन को, पल में सुलझा देते हैं,
नेक नीयती से जब भी किया, हर काम का अंजाम मिला।

नियम, क़ायदे और दफ़्तर के, सांचे में हम ढलते गए,
ईमानदारी की राहों पर, सुकूँ का एक मक़ाम मिला।

प्राचार्य का मार्गदर्शन और, सहकर्मियों का यह साथ,
इन्हीं से तो हर मुश्किल घड़ी में, हौसलों का जाम मिला।

यह महज़ एक नौकरी नहीं, मेरी साधना की राह है,
लड भड़ोल के इस आँगन में, सच्चा मुझे सम्मान मिला।

सुमेर सिंह
वरिष्ठ सहायक



अंधेरे से उजाले की ओर: ध्यान और विज्ञान



जब मन के किसी कोने में, गहरा अंधियारा छाता है,
नकारात्मक विचारों का चक्र, जब दिमाग को उलझाता है।

उदासी का जब पहरा हो, और उम्मीदें खो जाती हैं,
ज़िंदगी की हँसती राहें, जब तन्हा सी हो जाती हैं।

तब ध्यान केवल आस्था नहीं, एक वैज्ञानिक आधार भी है,
मस्तिष्क की उलझी तरंगों का, यह सटीक उपचार भी है।

आँखें मूँदकर जब हम बैठें, अपनी सांसों को पहचानें,
न्यूरोप्लास्टिसिटी के विज्ञान को, खुद के भीतर हम जानें।

तनाव बढ़ाने वाला एमिकडाला शांत होने लगता है,
सजगता का Prefrontal Cortex, फिर से जगने लगता है।

यह कोई जादू-टोना नहीं, मस्तिष्क का रूपांतरण है,
रसायनों के इस संतुलन से, मन का नया सृजन है।

कॉर्टिसोल का स्तर घटता, डोपामाइन संग सेरोटोनिन बढ़ता,
चिंतन की इस नई दिशा में, विज्ञान का नियम भी गढ़ता।

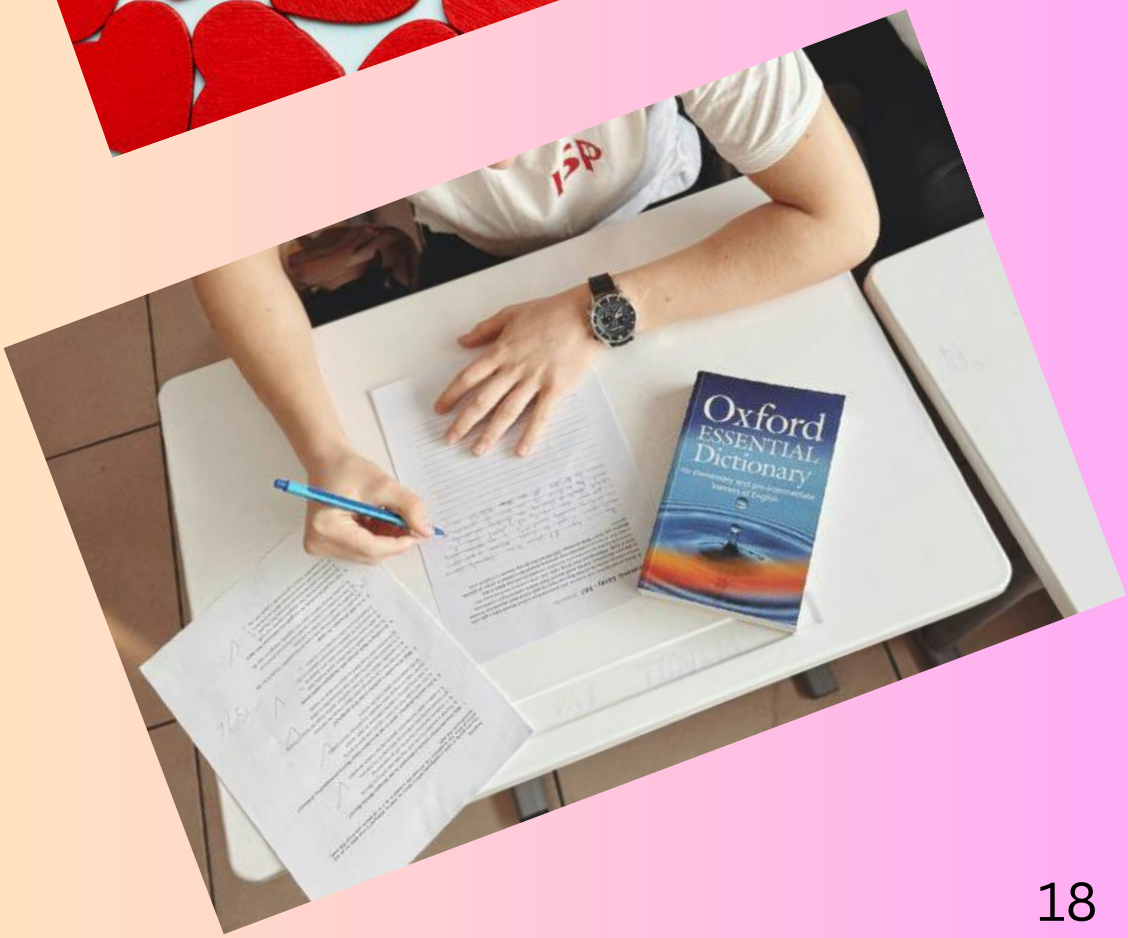
तर्क, तथ्य और जागरूकता से, जब विचारों को हम तोलेंगे,
भ्रम और अवसाद के सारे, बंद द्वार हम खोलेंगे।

अंधविश्वास और डर को छोड़, वैज्ञानिक सोच अपनाएँगे,
ध्यान की इस पावन धारा से, जीवन को स्वस्थ बनाएँगे।

सुमेर सिंह
वरिष्ठ सहायक

ENGLISH SECTION





INDEX
ENGLISH SECTION

Sr. No.	Article Title	Author Name & Class	Page No.
1	From the Editor's Desk	Dr. Pankaj Kumar (Faculty Editor)	20
2	10 Golden Rules for Life Student	Shabnam (B.Com. 3rd Year) Ansika (B.A. 3rd Year)	21
3	The Power of Discipline Hard Work The Importance of Skills	Bharti (B.A. 3rd Year) Shabnam (B.Com. 3rd Year) Sakshi (B.Com. 3rd Year)	22
4	Teacher The Importance of Sports The Value of Human Resources	Komal Kumari (B.A. 3rd Year) Deepika (B.A. 2nd Year) Akshay Kumar (B.A. 2nd Year)	23
5	College Life Work Culture	Shabnam (B.Com. 3rd Year) Isha (B.A. 3rd Year)	24
6	Major Tourist Destinations of Himachal Pradesh Future is Uncertain – Don't Wait for Tomorrow, Do It Today Major Temples of Himachal Pradesh	Reena (B.A. 2nd Year) Sangeeta Kumari (Asst. Prof., Sociology) Gunjan (B.A. 2nd Year)	25

From the Editor's Desk.....



Dear Students,

It gives me immense pleasure to see the English section of our college magazine come together once again this year. As the faculty editor, I have had the privilege of watching this section take shape from its very first submission and I must say, it has been a delightfully humbling experience.

Guiding young writers is never about correcting their words; it is about protecting their voice while gently smoothing the path it travels on. Over the past few months, I have read essays that surprised me with their maturity, poems that captured emotions far beyond what I expected from students juggling exams and deadlines, and articles that made me see our campus through fresh eyes. Each piece, in its own way, reflects the intellectual curiosity and honesty that this institution takes pride in nurturing.

Writing is a skill that grows only through practice, feedback, and the courage to be read. I have always believed that a college magazine is not merely a collection of academic exercises, but a living record of how young minds think, question, and express themselves at a particular point in time. This edition is no different, it is a mirror to the thoughts of this year's student body, and I hope you will find it as engaging to read as I found it enriching to edit.

I would like to commend every student contributor for their effort and sincerity, and the student editorial team for their dedication in bringing this section to life. Their hard work behind the scenes proofreading, formatting and patiently revising drafts deserves as much appreciation as the writing itself.

To our readers, I encourage you to not just read these pages, but to be inspired by them. Pick up a pen. Write your story. The next edition is waiting for your voice too.

With warm regards,
Dr. Pankaj Kumar

Editor
English Section



10 GOLDEN RULES FOR LIFE

Life does not come with an instruction manual. However, throughout human history, philosophers, thinkers, and wise individuals have left behind timeless principles to help us navigate its complexities. By adopting these ten golden rules, you can build a life filled with purpose, peace, and lasting happiness.

1. Practice Gratitude Daily: Happiness does not come from getting what we lack, but from appreciating what we already have. Spend a few minutes every day acknowledging the good things in your life. Gratitude shifts your focus from scarcity to abundance, instantly boosting your mental well-being.

2. Master Self-Discipline: Motivation gets you started, but discipline keeps you growing. True freedom comes from mastering your impulses, managing your time, and staying committed to your goals. When you control your actions, you control your destiny.

3. Embrace Continuous Learning: The world changes rapidly, and stagnation is the enemy of progress. Treat life as a perpetual classroom. Read books, learn new skills, ask questions, and remain curious. A mind that keeps learning stays young and adaptable.

4. Choose Kindness over Being Right: Relationships are more valuable than winning arguments. Treat everyone you meet with empathy, respect, and compassion. You never know what silent battles someone else is fighting. Kindness costs nothing but buys invaluable peace.

5. Take Responsibility for Your Life: Blaming others for your circumstances leaves you powerless. Accept full responsibility for your choices, your mistakes, and your happiness. When you stop acting like a victim, you reclaim the power to change your reality.

6. Protect Your Health: Your body is the only place you have to live. Prioritize clean nutrition, regular physical movement, and sufficient sleep. Wealth means nothing if you do not have the health to enjoy it.

7. Live in the Present Moment: Anxiety lives in the future, and regrets lives in the past. Peace can only be found right now. Do not let your life pass you by while you are distracted by what was or what could be. Secure your roots in the present.

8. Cultivate Meaningful Connections: Surround yourself with people who uplift, inspire, and challenge you to be better. Guard your inner circle fiercely against toxicity. Human beings thrive on deep, authentic relationships, not superficial social metrics.

9. Accept Change as Inevitable: Change is the only constant law of nature. Fighting against change causes unnecessary suffering. Learn to adapt, pivot, and flow with life's transitions. Often, what feels like an ending is simply a hidden beginning.

10. Define Your Own Success: Do not spend your life chasing someone else's version of happiness. True success is aligning your daily actions with your core values. Live authentically, speak your truth, and measure your worth by your inner peace.

Shabnam B.Com. Third Year



STUDENT

A student is a lifelong seeker of knowledge, stepping far beyond the boundaries of textbooks to understand the world. This phase of life serves as the vital foundation for personal growth, where individuals develop critical thinking, practical skills, and essential moral values. Beyond acquiring academic degrees, being a student is about mastering self-discipline, learning time management, and building resilience against challenges. Today's students face unique pressures from digital distractions and intense academic competition, making mental well-being and physical health just as crucial as high grades. Ultimately, students are the foundational pillars of society, and the habits, empathy, and integrity they cultivate today will directly shape the future of our nation.

Ansika B.A. Third Year



THE POWER OF DISCIPLINE

Discipline is the bridge between your goals and your achievements. It is the ability to control your impulses, manage your time, and stay focused on what matters most. While motivation might give you a temporary burst of energy to start a task, only consistent discipline ensures that you follow through to the end. It transforms random actions into positive habits, helping you build a stable and successful routine. In everyday life, practicing discipline means choosing long-term success over temporary comfort. It teaches you to master your emotions, resist distractions, and take full responsibility for your actions. Without discipline, talent and intelligence often go to waste. Ultimately, being disciplined is not about limiting your freedom; it is about empowering yourself to build a purposeful and rewarding life.

Bharti B.A. Third Year



HARD WORK

Hard work is the fundamental key to unlocking your true potential and achieving success. It is the continuous effort and dedication you put into a task, even when faced with difficulties or setbacks. While talent and luck can provide temporary advantages, only consistent hard work guarantees long-term progress. It builds your resilience, sharpens your skills, and teaches you the importance of perseverance.

In reality, there are no shortcuts to genuine success. Hard work transforms your dreams into concrete realities and gives you a deep sense of self-respect and satisfaction. When you commit to working hard, you overcome obstacles and open doors to new opportunities. Ultimately, hard work is not just about physical labour; it is a mental commitment to doing your best and never giving up on your goals.

Shabnam B.Com. Third Year



THE IMPORTANCE OF SKILLS

A skill is the practical ability to perform a task expertly and efficiently. While knowledge gives you the theoretical understanding of a subject, skills allow you to apply that knowledge in the real world. In today's fast-paced environment, having degrees alone is not enough. Possessing relevant skills—whether technical abilities like coding or soft skills like communication—is what truly sets you apart and makes you employable. Developing a skill requires patience, regular practice, and a willingness to learn from your mistakes. It boosts your confidence, opens doors to better career opportunities, and fosters creative problem-solving. In a rapidly changing digital world, old methods quickly become outdated. Therefore, continuously upgrading your skills is the best way to stay relevant, adapt to challenges, and secure long-term success.

Sakshi B.Com. Third Year

TEACHER



A teacher is a guiding light who shapes the mind, character, and future of an individual. Beyond simply delivering textbook lessons, a true educator inspires curiosity, instills moral values, and builds the confidence students need to face the world. Teachers act as mentors, counselors, and pillars of support, identifying the unique potential within each student and helping them nurture it.

The impact of a great teacher extends far beyond the walls of a classroom. By teaching disciplines, promoting empathy, and encouraging critical thinking, they mold responsible citizens who contribute meaningfully to society. Their patience, dedication, and selfless efforts lay the very foundation of all other professions. Ultimately, teachers do not just impart education; they leave a lasting footprint on the hearts and minds of generations.

Komal Kumari B.A. Third Year



THE IMPORTANCE OF SPORTS

Sports play a vital role in the overall development of an individual, offering immense benefits for both the body and the mind. Engaging in physical sports keeps the body fit, builds muscular strength, and improves cardiovascular health. It is one of the healthiest ways to combat lifestyle diseases, reduce daily stress, and refresh the mind after long hours of work or study. Beyond physical fitness, sports teach invaluable life skills that textbooks cannot provide. Through games, individuals learn the true meaning of teamwork, discipline, time management, and leadership. Sports teach us how to face failures gracefully and keep pushing forward, building strong mental resilience. Ultimately, sports are not just about winning medals; they are essential for building a healthy lifestyle, a strong character, and a united community.

Deepika B.A. Second Year

THE VALUE OF HUMAN RESOURCES

Human Resources (HR) represents the most valuable asset of any organization: its people. While capital, technology, and infrastructure are essential, it is the collective talent, skills, and dedication of the workforce that drive innovation and success. Human resource management is the strategic process of recruiting, training, and retaining the right individuals to help an organization achieve its long-term goals. Beyond administrative tasks like hiring and managing payroll, HR plays a critical role in building a positive workplace culture. It fosters open communication, resolves conflicts, and ensures employee safety and well-being. By investing in continuous training and career development, HR helps employees grow alongside the company. Ultimately, a strong human resource department bridges the gap between employee happiness and organizational growth, proving that businesses thrive when their people do.

Akshay Kumar
B.A. Second Year

COLLEGE LIFE







College life is a beautiful transition phase that bridges the gap between carefree childhood and responsible adulthood. It is a unique journey where academic learning goes hand in hand with deep personal growth. For many, college offers the first taste of true independence, giving students the freedom to make their own choices, manage their time, and explore their true passions.

Beyond the lectures and exams, the real magic of college happens outside the classroom. It is found in the lively canteen discussions, late-night group studies, cultural festivals, and sports events. These experiences help students discover hidden talents, build lifelong friendships, and learn the values of teamwork and diversity. It is a time when young minds learn to balance freedom with responsibility.

Of course, college life comes with its own set of challenges, such as academic pressure, career career anxieties, and peer competition. However, overcoming these hurdles builds resilience and prepares students for the real world. Ultimately, college life is not just about earning a degree; it is a transformative chapter that shapes your character, broadens your worldview, and leaves you with memories to cherish forever.

Shabnam B.Com. Third Year



WORK CULTURE

Work culture is the collective personality of an organization. It is shaped by the shared values, beliefs, attitudes, and behaviors of the people within a company. A workplace culture is not defined by trendy office perks or modern office spaces. Instead, it is defined by how employees interact, how decisions are made, and how leadership treats the workforce. A positive work culture promotes open communication, mutual respect, and psychological safety. When employees feel valued, heard, and supported, their productivity and creativity increase naturally. Healthy cultures prioritize a balanced work-life dynamic, recognize hard work, and offer clear paths for career growth. This environment reduces burnout and helps companies retain top talent.

Conversely, a toxic work culture can destroy employee morale and ruin a company's reputation. Environments filled with micro-management, office politics, and constant stress lead to high turnover rates and low-quality output. Ultimately, building a great work culture is a continuous team effort. It requires empathetic leadership and active participation from every single employee.

Isha B.A. Third Year

MAJOR TOURIST DESTINATIONS OF HIMACHAL PRADESH

Himachal Pradesh, fondly known as the 'Land of the Gods,' is a breathtaking mountain paradise nestled in the Western Himalayas that attracts nature lovers, adventure enthusiasts, and spiritual seekers from around the world. The state's capital, Shimla, is world-renowned for its colonial-era architecture, the bustling Mall Road, and the historic UNESCO World Heritage toy train. Meanwhile, Manali serves as a major hub for snow-capped peaks, vibrant mountain cafes, and thrilling adventure sports like paragliding and skiing in Solang Valley. For those seeking peace and cultural immersion, Dharamshala and McLeod Ganj offer a serene escape into Tibetan culture as the holy residence of the Dalai Lama. Additionally, the scenic Kullu Valley is famous for its gushing Beas River and traditional handicraft markets, while the quiet town of Dalhousie leads to Khajjiar, a stunning meadow beautifully nicknamed the 'Mini Switzerland of India.' From the engineering marvel of the Atal Tunnel to deep pine forests and high-altitude passes, Himachal Pradesh offers an unforgettable Himalayan experience for every traveller.

Reena B.A. Second Year

FUTURE IS UNCERTAIN– DON'T WAIT FOR TOMORROW, DO IT TODAY

The future is uncertain, and no one knows what tomorrow will bring. We often postpone important things by saying, “I will do it tomorrow.” But tomorrow is never guaranteed. The best time to start working toward our goals is today. Every moment we waste today is a moment we can never get back. Life gives us many opportunities, but opportunities do not always come again. If we have a dream, we should take the first step today instead of waiting for the perfect time. Small efforts made every day can lead to great achievements. As the saying goes, “The best time to start was yesterday. The next best time is today.”

Many successful people achieved their goals because they acted at the right time and did not keep postponing their work. Whether it is studying, learning a new skill, helping someone, or working toward a dream, we should begin now. “Yesterday is history, tomorrow is a mystery, but today is a gift.” Therefore, we should value the present moment. We cannot change yesterday or completely control tomorrow, but we can make the best use of today. Instead of waiting for tomorrow, let us take action today and make every moment meaningful. Do not wait for the future to change your life—start changing it today.

SANGEETA KUMARI
Assistant professor in Sociology

MAJOR TEMPLES OF HIMACHAL PRADESH



Himachal Pradesh, appropriately called "Devbhumi" or the Land of the Gods, is home to thousands of ancient temples that reflect the region's deep spiritual roots and magnificent hill architecture. Among its most revered shrines is the Hidimba Devi Temple in Manali, an ancient wooden structure built around a natural cave and dedicated to the patron deity of the Kullu Valley. The state also houses powerful Shakti Peethas, including the Bajreshwari Devi Temple in Kangra, the Chintpurni Temple in Una, and the Jwala Ji Temple, famous for its eternal, naturally burning blue flames that emerge directly from the rocks without any fuel. In the Mandi district, the Bhootnath Temple stands as a magnificent stone shrine dedicated to Lord Shiva, while the historic Baijnath Temple near Kangra showcases brilliant 13th-century Nagara-style architecture. Higher up in the mountains, the sacred Mani Mahesh in Chamba and the Jakhoo Temple in Shimla, featuring a colossal 108-foot statue of Lord Hanuman overlooking the ridge, attract thousands of trekkers and devotees alike. These sacred spaces, often built using traditional Kath-Kuni wood and stone techniques, are not just places of worship but are the cultural and historical pillars of Himalayan society.

Gunjan B.A. Second Year

पहाड़ी अनुभाग





अनुक्रमणिका
पहाड़ी अनुभाग

क्र. सं.	लेख / कहानी / कविता का शीर्षक	लेखक का नाम एवं कक्षा	पृष्ठ संख्या
1	पहाड़ी कहावतें (अर्थ सहित)	मुस्कान (बी.ए. तृतीय वर्ष)	28
2	मंडयाली घोड़ियाँ: "उचड़े पहाड़े जो चढ़ी गइयां लाड़या" (पारंपरिक लोकगीत) 'बेरोजगारी'	रीतिका (बी.कॉम. तृतीय वर्ष) साहिल (बी.कॉम. तृतीय वर्ष)	29
3	लोक कथा मानस: समझदार नूँह (लोक कहानी) 'किसाणां री जिंदगी'	कोमल कुमारी (बी.ए. तृतीय वर्ष) अक्षय कुमार (बी.ए. द्वितीय वर्ष)	30
4	'पढाई ते लिखाई दा महत्व' सकारात्मक सोच 'कामयाबी कैनी मिळणी'	कविता (बी.ए. द्वितीय वर्ष) दीपिका (बी.ए. द्वितीय वर्ष) कोमल कुमारी (बी.ए. तृतीय वर्ष)	31

पहाड़ी कहावतें





जेबा नी धेला, चंढना रेला।
अर्थ: जेब में एक पैसा भी न होना, पर सवारी रेल की चाहना।
व्याख्या: यह उन लोगों के लिए है जिनके पास संसाधन नहीं होते पर उनके शौक और दिखावा उनकी हैसियत से बहुत बड़े होते हैं।

धीए बसणा होंगा तां बसेया, जबाणीए दिख्यां हारदी।
अर्थ: बेटी को घर बसाना होगा तो वह बसा लेगी, केवल बड़ी-बड़ी बातें करने से बात नहीं बनती।
व्याख्या: डींगें हांकने या सिर्फ मुंह से बड़ी बातें करने से काम नहीं होता, असल योग्यता कर्म करने से सिद्ध होती है।

अपुं मरे बिना सुरग नी मिलदा।
अर्थ: खुद मरे बिना स्वर्ग नहीं दिखाई देता।
व्याख्या: अपनी सफलता के लिए खुद ही कड़ी मेहनत करनी पड़ती है, दूसरों के भरोसे रहकर कभी मनचाहा परिणाम नहीं मिलता।

कुते जो खीर नी पचदी ।
अर्थ: कुत्ते को खीर हजम नहीं होती।
व्याख्या: जब किसी ओछे या अयोग्य व्यक्ति को अचानक बहुत ज्यादा सम्मान या पैसा मिल जाता है, तो वह उसे संभाल नहीं पाता और घमंडी हो जाता है।

धानें दी फसल, परालें च ही दुसी जांदी।
अर्थ: धान की फसल का अंदाजा उसके पौधों के शुरुआती बढ़ाव से ही लग जाता है।
व्याख्या: होनहार व्यक्ति के लक्षण और उसके भविष्य की सफलता बचपन या काम की शुरुआत में ही दिखने लगती है ।

सई दिन डुब्या, जदी घोड़ी चढ़्या कुबा।
अर्थ: वह दिन कभी नहीं आ सकता जब किसी कूबड़े (कुबा) व्यक्ति की बारात सजे या वह शान से घोड़ी चढ़े।
व्याख्या: किसी असंभव कार्य या ऐसी स्थिति के लिए इसका उपयोग होता है जिसका होना नामुमकिन के बराबर हो।

घास कटी नी, अते पंद्रां पंड्या त्यार।
अर्थ: अभी खेत से घास काटी भी नहीं है और पहले ही पंद्रह गठ्ठर तैयार बता दिए।
व्याख्या: काम शुरू करने से पहले ही उसके परिणामों के ख्याली पुलाव पकाना या बड़ी-बड़ी डींगें मारना।

जाउखे ढोलकू, ताउखे मोलकू।
अर्थ: जहाँ भी ढोल बजता दिखे, वहीं बिना बुलाए पहुंच जाना।
व्याख्या: यह कहावत उन बिन-बुलाए मेहमानों या लोगों के लिए इस्तेमाल होती है जो हर उत्सव या दूसरों के मामलों में बिना निमंत्रण के टांग अड़ाने पहुंच जाते हैं।

चोरे ते पंड कहाली।
अर्थ: चोर खुद ही अपनी चोरी की गठरी को हड़बड़ी में संभाल नहीं पाता और पकड़ा जाता है।
व्याख्या: गलत काम करने वाला व्यक्ति अपनी किसी न किसी हड़बड़ी या बेवकूफी भरी हरकत के कारण खुद ही कानून या लोगों के सामने बेनकाब हो जाता है।

घर दा जोगी जोगीड़ा, बाहर दा जोगी सिद्ध।
अर्थ: घर का सिद्ध पुरुष भी साधारण जोगीड़ा लगता है, जबकि बाहर का कोई साधारण व्यक्ति भी चमत्कारी सिद्ध पुरुष मान लिया जाता है।
व्याख्या: अपने घर, परिवार या गांव के गुणी व्यक्ति की लोग कद्र नहीं करते, जबकि बाहर के कम गुणी व्यक्ति को भी सिर आंखों पर बिठाते हैं ।

Muskan B.A. Third Year

मंडयाली घोडियाँ "उचड़े पहाड़े जो चढ़ी गइयां लाड़या"



उचड़े पहाड़े जो चढ़ी गइयां लाड़या,
तेरी यो मामियां जो जोहंदी ओ।
बागा रे मोरा हो, बोलदा ओ,
लाड़े रे आंगणे हो, बाजा बजदा ओ।

बाबा री हवेली कजो चमके ओ?
कामा रे भाईये हो, सेहरा बन्न्या ओ।
सुख-सुख मन्नतें तूं मंगे लाड़या,
कमरूनागा देवे हो, शीश दित्या ओ।

हथुआं री मेंहदी तां रची गइया लाड़या,
पैरां रे झांझरा हो, छम-छम बाजदे ओ।
अम्मा तेरी आरती तां उतारे ओ,
डोलिया रा रस्ता हो, सज्या-सज्या ओ।

छौटे-छौटे भाईये तां घोड़ी फेरे ओ,
बहनां तां गांई-गांई, मगंल गावे ओ।
मंडी रे ब्याहे री तां धूम मची ओ,
सज्जणां-मित्रां हो, नचाणा पाया ओ।

उचड़े पहाड़े जो चढ़ी गइयां लाड़या,
तेरी यो मामियां जो जोहंदी ओ।
बागा रे मोरा हो, बोलदा ओ,
लाड़े रे आंगणे हो, बाजा बजदा ओ।

Ritika B.Com. Third Year



'बेरोजगारी'

आजकल दे बक्ते च बेरोजगारी साडे समाज ते नौजवानां तांई एक बहुत बड्डी समस्या बणी गई है। हिमाचल दे नौजवान दिन-रात कड़ी मेहनत करीके बड्डियां-बड्डियां डिग्रियां तां लैई लैंदे न, पर उना जो उना री पढ़ाई दे साबा नाल नौकरी नी मिल्ल्दी। सरकारी नौकरियां बहुत कम न ते प्राइवेट सेक्टर च पहाड़ दे अंदर इतने मौके नी हन, जिस कारण पढ़े-लिखे गबरू ते कुड़ियां घरे बैठे रहने जो मजबूर न। ऐस बेरोजगारी री वजह ते नौजवानां च मानसिक तनाव ते निराशा बधी जांदी है, ते कइयां जो तां रोजगार दी तलाश च अपणा प्यारा पहाड़ ते बुजुर्ग मां-बाप छड्डीके दूर बड्डें शहरां च जाणा पौंदा है। कइयो वार रोजगार न मिल्ळने दे कारण नौजवान गलत रस्ते या नशे पासे भी भटकी जांदे न। ऐस समस्या जो दूर करने तांई इत्थू नए उद्योग लगाना, स्वरोजगार (SELF-EMPLOYMENT) जो बढ़ावा देणा ते नौजवानां जो पढ़ाई दे नाल-नाल हुनर (SKILLS) सिखाणा बहुत जरूरी है, तां कि साडे पहाड़ दा पैसा ते टैलेंट पहाड़ च ई रई सके।

Sahil B.Com Third Year

लोक कथा मानस: समझदार नूँह



एक गांवे च एक बुढ़िया ते ओसदा लाड़ा (बेटा) रहंदे थे। बेटे रा नया-नया ब्याह हुआ था। बुढ़िया अपणी नूँह (बहू) जो हर वेले परख्खदी रहंदी थी कि ओ चतुर है या नी। एक दिहाड़े (दिन) बुढ़िया ने अपणी नूँह जो परेशान करने तांई एक तरकीब सोची। बुढ़िया ने नूँह जो एक खाली टोकरी दित्ती ते बोल्या, "ले धीए (बेटी), ए टोकरी लै ते बाजार जा। बाजार ते 'धुप्प ते छां' (धूप और छांव) लैईके घरे आ। पर याद रख्खीं, जे खाली हत्थ आई तां घरे नी बड़न देणा।" बेचारी नूँह सोचना च पई गई कि बाजार च धूप ते छांव कत्थू मिल्लणी? ओ बाजार चली गई ते रस्ते च सोचना लगी। ओ बड़ी समझदार थी। उसने थोड़ा दिमाग लड़ाया। ओ बाजार गई ते उसने एक बढ़िया, बड्डी जही 'कंडाली' (बांस री छतरी या छाता) खरीदी। ओहने छतरी टोकरी च रख्खी ते घरे आ गई। सास ने देख्या तां बोल्या, "कत्थू है धुप्प ते छां?" नूँह ने हंसिके बोल्या, "इत्थू देखो सासू जी! ये जो छतरी है, एह जो ताणी (खोल) देओ तां छां (छांव) बणी जांदी, ते बंद करी देओ तां धुप्प (धूप) लग्गी जांदी। बणी गई न धुप्प ते छां!" सास हैरान होई गई पर ओ चुप रही।

दूजी परीक्षा: क्हछ दिहाड़े बाद बुढ़िया ने नूँह जो एक थाली दित्ती ते बोल्या, "आज मिंजो 'बिना हड्डे दा मांस' खाणा है। बाजार जा ते लैईके आ।" नूँह फिर बाजार गई। ओ कसाई दे पास नी गई, बल्कि ओ हलवाई दे पास गई। ओ बाजार ते 'दूध री बर्फी' लैईके आई। सास ने बोल्या, "ए क्या है?" नूँह ने बोल्या, "सासू जी, दूध पशुएं दे शरीर ते ई निकलदा, पर इत्थू च कोई हड्ड़ी नी हुंदी। एही है बिना हड्डे दा शुद्ध मांस (बर्फी)!" सास ओस री अक्कल अग्गे फिर हार गई।

तीजी ते आखरी परीक्षा: बुढ़िया ने सोच्या कि अब ऐस जो ऐसा काम देणा जो ए कदी नी करी सके। उसने अपनी नूँह जो सूत (धागा) रा एक बड्डा गोला दित्ती ते बोल्या, "ऐस सूत जो राख (स्वाहा) बनाई दे, पर धागा टुट्टणा नी चाहिदा ते धागे दा आकार एडा ई रहणा चाहिदा।" नूँह ने बोल्या, "ठीक है सासू जी।" उसने एक पत्थर री बड्डी सिल्ल (पटिया) लित्ती। ओस दे ऊपर ओ सूत रा गोला ओस ई आकार च रख्या। फिर उसने ओस सूते जो अग्ग लगाई दित्ती। सूत पूरा जली गया पर पत्थर दे ऊपर ओस री राख ओस ई गोले दे आकार च बची रही। नूँह ने सासू जो सद्दा ते बोल्या, "लो सासू जी, सूत री राख बणी गई, धागा टुट्ट्या भी नी ते आकार भी ओही है। हुण तुसां ऐस गोले जो उठाई लैओ।" बुढ़िया जैसे ई हाथ लगाने लगी, राख बिखर गई। बुढ़िया मुस्कुराई पई ते उसने अपनी नूँह जो गले लगाई लिया। ओ समझ गई कि ओस री नूँह सिर्फ चलाक नी, बल्कि बहुत समझदार है जो घर जो बड़े अच्छे से संभाली सकदी है।

Komal Kumari B.A. Third Year

'किसाणां री जिंदगी'





हिमाचल प्रदेश च किसाणां री जिंदगी बड़ी ई सादी ते कड़ी मेहनता वाली हुंदी है। पहाड़ दे किसान सवेरे कौए री बांगे (सुबह जल्दी) ई उठी जांदे न ते अपणे बळदां (बैलों) या ट्रैक्टर जो लैईके खेता च चली जांदे न। ओ मौसम री परवाह कीते बिना—चाहे कड़कती ठंड हो, तेज धुप्प हो या बरखा हो—खेता च जी-तोड़ मेहनत करदे न। इत्थू दे किसान खेता च कनक (गेहूं), मक्की, धाण (धान) ते बक्खो-बक्ख सब्जियां बीझदे न, ते नाल ही बागां च सेब, पल्लम ते नाशपाती भी उगांदे न। उना री जिंदगी पूरी तरकी कुदरत ते बरखा पर निर्भर हुंदी है; जे कदी सुक्का (सूखा) पई जाए या ओले पई जां, तां उना री पूरी साल री मेहनत मिट्टी च मिली जांदी है। कड़कती मेहनता दे बाद भी, जब खेता च हरी-भरी फसल लहलाहांदी है, तां किसाणां दा दिल खुशी नाल भरी जांदा है। सच पुछ्छो तां, पहाड़ दे किसाणां री ईमानदारी, सबर ते कड़ा संघर्ष ई पूरे देश दा पेट पालदा है ते देवभूमि जो असली सुंदरता दिंदा है।

Akshay Kumar B.A.Second Year

'पढ़ाई ते लिखाई दा महत्व'



आसंदे जीवने च पढ़ाई ते लिखाई दा महत्व सबते बड्डा है, क्योंकि ऐसदे बिना जिंदगी च हनेरा ई रहंदा है। पढ़ाई-लिखाई सिर्फ स्कूल-कॉलेज ते डिग्रियां लैणे तांई जरूरी नी है, बल्कि ए आं जो सही ते गलत विच भेद करना सिखांदी है। जेड़ा माणस पढ़्या-लिख्या हुंदा है, ओ समाज च इज्जत पांदा है ते अपणे पैरां पर खड़ा होईके तरक्की करदा है। आज दे बक्ते च पढ़ाई दे नाल-नाल हुनर (SKILLS) सिख्खणा भी उतना ई जरूरी है, तां कि नौजवान रोजगार पा सकें ते आत्मनिर्भर बणी सकें। पढ़ाई साडी अक्कल जो खोलदी है, साडा आत्मविश्वास बधांदी है ते आं जो कुप्रथाएं ते अंधविश्वासों ते दूर रख्खदी है। सच पुछ्छो तां, पढ़े-लिखे समाज ते ई एक सुनहरे भविष्य री नींव रखी जांदी है, जेड़े देश दे विकास च सबते बड्डा हिस्सा पांदा है।

Kavita B.A. Second Year

सकारात्मक सोच

जीवने च सकारात्मक सोच रा होणा बहुत जरूरी है, क्योंकि साडी सोच ई साडी जिंदगी जो बदलदी है। जब आसे हर काम जो अच्छे मन नाल ते भरोसे नाल करदे हन, तां बड्डो ते बड्डी मुश्किल भी आसान होई जांदी है। सकारात्मक सोच दा मतलब ए नी है कि जिंदगी च परेशानियां नी आउणी, बल्कि इसका मतलब ए है कि हर परेशानी दा सामना हिम्मत ते मुस्कुराहट नाल करना। जेड़ा माणस अंदर ते खुश ते पॉजिटिव रहंदा है, ओ मुश्किल बक्ते च भी हार नी मन्दा ते आगे बढ़ने रा रस्ता ढूंढी लैंदा है। साडी अच्छी सोच साडे शरीर ते दिमाग जो भी तंदुरुस्त रख्खदी है ते आं जो चिंता ते डिप्रेशन ते दूर रख्खदी है। अगर आसे अपणी सोच जो साफ ते सुथरा रख्खेंगे, तां साडा आस-पास दा माहौल भी खुशहाल बणी जाएगा। सच पुछ्छो तां, सकारात्मक सोच ई ओ ताक़त है जेड़ी हनेरे च भी उम्मीद रा दीवा जगाई रख्खदी है।



Deepika B.A. Second Year

'कामयाबी कैनी मिल्ळनी'



जीवने च कामयाबी पाना कोई एकाध दिहाड़े (एक दिन) दा काम नी है, ऐस तांई कड़ी मेहनत, सबर ते पक्के इरादे री जरूरत हुंदी है। कामयाबी कैनी मिल्ळनी, ऐसदा सीधा रस्ता है—अपणे लक्खे (लक्ष्य) जो साफ़ रख्खणा ते ओस पासे रोज छोटे-छोटे कदम बधाणा। जब आसे बिना रुके, लगातार अनुशासन नाल अपणा काम करदे हन, तां कामयाबी अपणे आप साडे कदम चूम्ल्दी है। रस्ते च कइयो वार मुश्किलें भी आउणी ते कइयो वार हार भी मिलनी, पर असली कामयाब ओही माणस हुंदा है जेड़ा अपणियां गलतियां ते सीखदा है ते दोबारा दुगनी ताक़त नाल उठ खड़ा हुंदा है। पढ़ाई हो या कोई धंधा, समय दा सही प्रबंधन (Time management) ते अपणे हुनर (Skills) जो रोज निखारना बहुत जरूरी है। आलस जो छड्डीके ते सकारात्मक सोच रख्खीके जो माणस संघर्ष करदा रहंदा है, ओ जीवन री हर परीक्षा च अव्वल आउंदा है। सच पुछ्छो तां, कामयाबी किस्मत ते नी, बल्कि साडी ईमानदारी नाल कीती री मेहनता ते ई मिल्ळनी।

Komal Kumari B.A. Third Year

GLIMPESES OF VARIOUS ACTIVITIES













GLIMPESES OF VARIOUS ACTIVITIES





















GLIMPESES OF VARIOUS ACTIVITIES















GLIMPESES OF VARIOUS ACTIVITIES















GLIMPESES OF VARIOUS ACTIVITIES












GLIMPESES OF VARIOUS ACTIVITIES
















GLIMPESES OF VARIOUS ACTIVITIES













मीडिया की नजर में लड भड़ोल महाविद्यालय



लडभड़ोल : नशा मुक्ति कार्यक्रम के दौरान लडभड़ोल महाविद्यालय के विद्यार्थी व स्टाफ सामूहिक चित्र में। (भारद्वाज)

प्रशिक्षुओं को पौधारोपण की सही विधि समझाई और पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने नशे के दुष्प्रभावों पर चर्चा करते हुए कहा कि नशा समाज के विकास में एक गंभीर बाधा है, जो व्यक्ति के स्वास्थ्य, परिवार और भविष्य को नष्ट कर देता है।

इसी दौरान प्रशिक्षुओं व कर्मचारियों ने नशा मुक्ति की शपथ लेते हुए संकल्प लिया कि वे स्वयं किसी भी प्रकार का नशा नहीं करेंगे, नशा करने वालों को इसे छोड़ने के लिए प्रेरित करेंगे।

मंडी (नि.स.): वल्लभ कालेज में एन.सी.सी. वायुसेना विंग एवं एन.सी.सी. आर्मी विंग यूनिट्स ने नशा मुक्ति शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया।

समारोह की अध्यक्षता एन.सी.सी. वायुसेना विंग मंडी के फ्लाइट कमांडर



सरकाघाट : आर.के. इंटरनैशनल स्कूल नबाही के विद्यार्थी नशा निवारण शपथ ग्रहण करते हुए। (महाजन)

लडभड़ोल में विद्यार्थियों को बताए नशे के दुष्प्रभाव

लडभड़ोल (भारद्वाज): राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में बुधवार को नशा मुक्ति पर एकदिवसीय जागरूकता सैमीनार आयोजित किया गया। सैमीनार में महाविद्यालय के कार्यकारी प्राचार्य डा. मुनीष ठाकुर बतौर मुख्यातिथि शामिल हुए। कार्यक्रम संयोजक प्रो. संजीव कुमार ने बताया कि इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को नशे के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक करना तथा नशे से प्रभावित लोगों की सहायता व सहयोग करना रहा। डा. मुनीष ठाकुर ने कहा कि नशे

5 शिमला, बुधवार, 30 जुलाई 2025
www.dainiksaveratimes.com

कड़ी मेहनत, निरंतर और दृढ़ निश्चय के साथ किए प्रयास से ही जीवन में लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं : डॉ. मुनीश ठाकुर



सवेरा न्यूज/लक्की शर्मा लडभड़ोल, : राजकीय महाविद्यालय लड़भड़ोल में सत्र 2025-26 के लिए बीए व बी कॉम प्रथम वर्ष के छात्र-छात्राओं के लिए एक दिवसीय ओरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के कार्यकारी प्राचार्य डॉ. मुनीष ठाकुर ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। इस आयोजन के अंतर्गत प्रो. तिलक शर्मा ने विद्यार्थियों को विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली के बारे में संबोधित किया। प्रो. पंकज कुमार ने उन्हें विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं से अवगत करवाया जबकि प्रो. संजीव कुमार ने महाविद्यालय में आगामी सत्र की सभी गतिविधियों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर डॉ. मुनीष ठाकुर ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि कड़ी मेहनत, निरंतर और दृढ़ निश्चय के साथ किए गए प्रयास से ही हम अपने जीवन में लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। कार्यक्रम संयोजक प्रो. तिलक शर्मा ने इस आयोजन के मौके पर उपस्थित सभी सहयोगियों के प्रति आभार जताया।

मातृ दिवस के उपलक्ष्य में किया पौधारोपण



लडभड़ोल : पौधारोपण करती हुई महाविद्यालय की छात्राएं। (भारद्वाज)

लडभड़ोल, 23 अगस्त (भारद्वाज): राजकीय महाविद्यालय लड़भड़ोल की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई ने मातृ दिवस के उपलक्ष्य में एक दिवसीय पौधरोपण शिविर आयोजित किया।

एक पौधा मां के नाम थीम पर आधारित इस शिविर का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना, मातृभक्ति की भावना को प्रोत्साहित करना तथा छात्रों में सामाजिक जिम्मेदारी विकसित करना था। शिविर में महाविद्यालय के 50 एन.एस.एस. स्वयंसेवकों ने भाग लिया।

महाविद्यालय के प्राचार्य डा. मनीष ठाकुर के मार्गदर्शन और एन.एस.एस. कार्यक्रम अधिकारी सहायक प्रो. संजीव कुमार के नेतृत्व में संपन्न इस कार्यक्रम ने छात्रों को राष्ट्र निर्माण और सामाजिक सेवा से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

दैनिक सवेरा टाइम्स
अंधेरे से उजाले की ओर...

विद्यार्थियों ने खेलों को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने का किया संकल्प



सवेरा न्यूज/लक्की शर्मा, लडभड़ोल : राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर एक घंटा, खेल के मैदान में थीम के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की कसरतें (एक्सरसाइज) का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। आयोजन की शुरूआत मेजर ध्यानचंद को श्रद्धांजलि और फिट इंडिया प्रतिज्ञा के साथ हुई। प्राचार्य डॉ. मुनीष ठाकुर ने मेजर ध्यानचंद के आदर्शों और खेलों के महत्व पर प्रकाश डाला। महाविद्यालय के खेल प्रभारी सहायक प्रोफेसर संजीव कुमार ने बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य छात्रों में रोजाना कम-से-कम एक घंटे की शारीरिक गतिविधि को प्रोत्साहित करना है। उन्होंने बताया की खेलों के माध्यम से स्वस्थ जीवनशैली, टीम भावना, अनुशासन और सशक्त समाज का निर्माण होता



लडभड़ोल : नशा मुक्ति कार्यक्रम के दौरान महाविद्यालय के विद्यार्थी व स्टाफ सदस्य सामूहिक चित्र में। (भारद्वाज)

नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित किए विद्यार्थी

मीडिया की नजर में लड भड़ोल महाविद्यालय

मनीष मिस्टर और आरती मिस फ्रेशर चुनीं



राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में चुने गए मिस्टर, मिस फ्रेशर और पर्सनेलिटी। स्रोत : कॉलेज प्रबंधन

लडभड़ोल (मंडी)। राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में शनिवार को नव प्रवेशी छात्र-छात्राओं के स्वागत के लिए फ्रेशर पार्टी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में प्रथम वर्ष के सभी विद्यार्थियों का महाविद्यालय के मुख्य द्वार पर तिलक लगाकर और फूल बरसाकर भव्य स्वागत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य डॉ. मनीष ठाकुर ने किया और नव प्रवेशी छात्रों को शुभकामनाएं दीं।

दैनिक भास्कर हिमाचल भास्कर 27-09-2025

लडभड़ोल महाविद्यालय में अभिभावक शिक्षक संघ कार्यकारिणी का गठन 29 को

लडभड़ोल| राजकीय महाविद्यालय, लडभड़ोल में 29 सितंबर को प्रातः 11:00 बजे अभिभावक-शिक्षक संघ (पी. टी. ए.) कार्यकारिणी का गठन किया जाएगा। यह आयोजन महाविद्यालय परिसर में आयोजित होगा। इस अवसर पर सभी अभिभावकों से उनकी सक्रिय भागीदारी और रचनात्मक सुझावों की अपेक्षा की जाती है, ताकि विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए सामूहिक प्रयास किए जा सकें। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. मुनीष ठाकुर ने सभी अभिभावकों से अनुरोध किया है कि वे उपस्थित होकर इसे सफल बनाएं।

कालेज की वार्षिक पत्रिका दर्पण का लोकार्पण



लडभड़ोल कालेज की वार्षिक पत्रिका के लोकार्पण के दौरान प्राचार्य व अन्य • जागरण

लडभड़ोल : राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल ने कालेज परिसर में शैक्षणिक सत्र 2024-25 के लिए वार्षिक कालेज पत्रिका विद्यार्थी दर्पण का विमोचन किया। कार्यकारी प्राचार्य डा मुनीष ठाकुर ने पत्रिका के प्रकाशन में उनके समर्पित प्रयासों के लिए संपादकीय टीम और योगदानकर्ताओं को बधाई दी। इस पत्रिका मुख्य संपादक तिलक शर्मा नले किया। इसमें संकाय संपादकों का बहुमूल्य योगदान है। हिंदी अनुभाग से संजीव कुमार, अंग्रेजी से पंकज कुमार, पहाड़ी अनुभाग डा प्रीति, छात्र संपादकीय टीम में संजना कुमारी, पलक व स्वाति शामिल रहीं। (संस)

दैनिक भास्कर हिमाचल 02-10-2025

राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में हुई 'पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता'



लडभड़ोल | राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में 'रेड रिबन क्लब' व 'राजनीति विज्ञान' विभाग के संयुक्त

न्यूज डायरी

लडभड़ोल में मनाया अंतरराष्ट्रीय अहिंसा सप्ताह

लडभड़ोल (मंडी)। राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में रेड रिबन क्लब एवं राजनीति विज्ञान विभाग के संयुक्त तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय अहिंसा सप्ताह का शुभारंभ कार्यकारी प्राचार्य डा. मुनीष ठाकुर ने किया। कार्यक्रम की संयोजक डॉ. प्रीति ने कहा कि महात्मा गांधी हमारे आदर्श हैं। इनकी शिक्षाएं आज भी प्रासंगिक हैं। सोमवार को महाविद्यालय के विद्यार्थियों को सत्य एवं अहिंसा का जीवन के प्रत्येक मार्ग पर अनुसरण करने की शपथ दिलाई। संवाद

लडभड़ोल कालेज में करवाई प्रतियोगिताएं

लड़भड़ोल। राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में राजनीति विभाग द्वारा भारत विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस तथा आगामी स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । कार्यक्रम की शुरुआत राजनीति विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्ष डा. प्रीति के वक्तव्य से हुई। उन्होंने अपने वक्तव्य में विभाजन की, त्रासदी पर प्रकाश डालते हुए, विद्यार्थियों को आजादी के महत्व से अवगत करवाया। उन्होंने कहा हमे विभाजन की विभीषिका से सबक लेते हुए परस्पर समन्वय, सहयोग, एकता तथा शांतिपूर्ण सह अस्तित्व के दृष्टिकोण का विकास करना चाहिए। इस अवसर पर महाविद्यालय के कार्यकारी प्राचार्य डाकघर मुनीष ठाकुर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में विद्यार्थियों को

मीडिया की नजर में लड भड़ोल महाविद्यालय

लडभड़ोल कॉलेज में भाषण, गायन, नृत्य और खेल प्रतियोगिताओं में दिखा छात्रों का उत्साह

अभिषेक, अनंत ज्ञान



लडभड़ोल कॉलेज में विकसित भारत मिशन पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

जोगिंद्रनगर। राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में विकसित भारत मिशन थीम के अंतर्गत विविध सांस्कृतिक एवं खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन बड़े उत्साह और जोश के साथ किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. मुनीष ठाकुर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के तहत समाजशास्त्र विभाग और संगीत विभाग के संयुक्त तत्वावधान में भाषण प्रतियोगिता, एकल गान, समूह गान तथा समूह नृत्य प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं के संयोजक प्रो. संगीता और प्रो. अनीता रहीं। भाषण प्रतियोगिता में पल्लवी ने प्रथम तथा फरहान ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। समूह गान में आसिफ एवं ग्रुप ने प्रथम तथा मुस्कान एवं ग्रुप ने द्वितीय स्थान हासिल किया। एकल गान प्रतियोगिता में साहिल और आरती ने क्रमशः प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं, समूह नृत्य में कोमल एवं ग्रुप ने प्रथम तथा आरती एवं ग्रुप ने द्वितीय स्थान पाया। खेलकूद गतिविधियों के अंतर्गत बैडमिंटन एकल और वॉलीबाल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनके संयोजक प्रो. संजीव रहे। बैडमिंटन में रिशांत ने प्रथम तथा राजीव ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। मुख्य अतिथि डॉ. मुनीष ठाकुर ने अपने संबोधन में कहा कि ऐसे कार्यक्रम विद्यार्थियों में टीम भावना, प्रतिस्पर्धात्मक योग्यता और सर्वांगीण विकास की भावना को बढ़ावा देते हैं। उन्होंने सभी विजेताओं को बधाई दी और विद्यार्थियों से विकसित भारत मिशन की भावना को अपने जीवन में आत्मसात करने का आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक किया और अंत में संयोजकों ने सभी प्रतिभागियों एवं अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

भाषण में पल्लवी प्रथम



लडभड़ोल: सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती महाविद्यालय की छात्राएं। (भारद्वाज)

राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में करवाई सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं खेलकूद प्रतियोगिताएं

लडभड़ोल (भारद्वाज): राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में बुधवार को विकसित भारत मिशन थीम के अंतर्गत सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं खेलकूद प्रतियोगिताएं करवाई गईं।

इस अवसर पर महाविद्यालय के कार्यवाहक प्राचार्य डा. मुनीष ठाकुर मुख्यातिथि थे। समाज शास्त्र विभाग तथा नृत्य प्रतियोगिताएं करवाई गईं जिनके संयोजक प्रो. संगीता एवं प्रो. अनीता रहीं। भाषण प्रतियोगिता में पल्लवी ने प्रथम, फरहान ने द्वितीय, समूह गान में आसिफ एवं ग्रुप ने प्रथम तथा मुस्कान एवं ग्रुप ने द्वितीय स्थान हासिल किया।

एकलगान में साहिल तथा आरती ने प्रथम, समूह नृत्य में कोमल एवं ग्रुप ने प्रथम तथा आरती एवं ग्रुप ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। बैडमिंटन तथा वालीबाल प्रतियोगिताओं के संयोजक प्रो. संजीव रहे। बैडमिंटन में रिशांत ने प्रथम व राजीव ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। डा. मुनीष ठाकुर ने सभी विजेताओं को बधाई दी और विद्यार्थियों

दैनिक भास्कर हिमाचल भास्कर 01-11-2025

लडभड़ोल कॉलेज की सीएससीए की नवगठित कार्यकारिणी ने ली शपथ



लडभड़ोल|राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में सीएससीए की नवगठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. मुनीष ठाकुर ने पदाधिकारियों को शपथ दिलाई। पल्लवी को प्रधान, शबनम उप-प्रधान, साक्षी सचिव और दीक्षा उप-सचिव चुनी गईं। इसके अलावा कशिश, कृष, श्रेया, अंशिका, मुस्कान और सारिका कक्षा प्रतिनिधि बनीं। वहीं कोमल, साहिल, शुभम, फरहान, रोहित और प्रिया मनोनीत सदस्य रहे। डॉ. ठाकुर ने विद्यार्थियों को नेतृत्व व अनुशासन की भावना से कार्य करने का आह्वान किया। समारोह में सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती पर एकता की शपथ भी दिलाई गई। कार्यक्रम का संचालन प्रो. संजीव कुमार ने किया।

दैनिक भास्कर हिमाचल भास्कर 28-10-2025

राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में पीटीए कार्यकारिणी का गठन



लडभड़ोल | राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में सत्र 2025-26 के लिए अभिभावक-शिक्षक संघ (पी.टी.ए.) की नई कार्यकारिणी का गठन किया गया।

बैठक की अध्यक्षता कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. मुनीष ठाकुर ने की। चुनाव प्रक्रिया में संजीव कुमार प्रधान, विनोद कुमार उप-प्रधान, संजीव कुमार सचिव, सोनू देवी सह-सचिव, सुमन लता मुख्य सलाहकार, रीता देवी कोषाध्यक्ष तथा मीना देवी, लता देवी और सोनू देवी सदस्य चुनी गईं। डॉ. ठाकुर ने नवगठित टीम को बधाई देते हुए कहा कि पीटीए संस्था कॉलेज के विकास और विद्यार्थियों की प्रगति में महत्वपूर्ण सेतु का कार्य करती है। उन्होंने उम्मीद जताई कि नई टीम सहयोग

मीडिया की नजर में लड भड़ोल महाविद्यालय

पुस्तकालय का करें अधिक से अधिक उपयोग : डा. मुनीष

लडभड़ोल महाविद्यालय में राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह संपन्न

लडभड़ोल, 21 नवम्बर (भारद्वाज): राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में 15 से 21 नवम्बर तक राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह मनाया गया। शुक्रवार को इस सप्ताह के अंतिम दिन महाविद्यालय की पुस्तकालय इकाई द्वारा विषयवार पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई गई, जिसमें विभिन्न संकायों की पुस्तकों का प्रदर्शन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के कार्यकारी प्राचार्य डा. मुनीष ठाकुर ने की, जबकि कार्यक्रम की संयोजक संचिता रहीं। डा. ठाकुर ने छात्रों को पुस्तकालय के महत्व तथा अध्ययन-अध्यापन में पुस्तकों की भूमिका पर प्रकाश डाला।

उन्होंने विद्यार्थियों से पुस्तकालय का अधिक से अधिक उपयोग करने का आह्वान किया। पुस्तक प्रदर्शनी में सभी विभागों के छात्र-छात्राओं ने अपने-अपने विषयों की पुस्तकें रुचिपूर्वक देखीं तथा शिक्षकों ने भी विद्यार्थियों को विभिन्न पुस्तकों के महत्व और उपयोगिता के बारे में मार्गदर्शन दिया।



लडभड़ोल : स्थानीय कालेज में लगी पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लेते महाविद्यालय के विद्यार्थी। (भारद्वाज)

लडभड़ोल कॉलेज में हुई इंटरैक्टिव कार्यशाला



कार्यशाला के दौरान सामूहिक चित्र में स्टूडेंट्स व शिक्षक। अनंत ज्ञान

अनंत ज्ञान, जोगिंद्रनगर। राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल के अर्थशास्त्र विभाग द्वारा विद्यार्थियों में सांख्यिकी के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से एक इंटरैक्टिव कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम 'सपोर्ट फॉर स्टैटिस्टिक्स स्ट्रेंथनिंग' योजना के अंतर्गत आयोजित किया गया, जिसमें विद्यार्थियों को दैनिक जीवन तथा विभिन्न क्षेत्रों में सांख्यिकीय उत्पादों के महत्व से अवगत कराया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य प्रकाश चौहान ने की। चौहान ने कहा कि वर्तमान समय में सांख्यिकी का महत्व लगातार बढ़ता जा रहा है। नीति निर्माण, आर्थिक विकास, शोध कार्य तथा दैनिक जीवन में सही निर्णय लेने के लिए सांख्यिकीय आंकड़ों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने विद्यार्थियों को इस विषय में अधिक रुचि लेने और इसके व्यावहारिक उपयोग को समझने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के संयोजक प्रो. तिलक शर्मा ने कार्यशाला के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों में सांख्यिकीय ज्ञान और जागरूकता को बढ़ावा दिया जा रहा है, ताकि वे भविष्य में विभिन्न क्षेत्रों में आंकड़ों के सही उपयोग को समझ सकें। कार्यशाला के दौरान विद्यार्थियों के साथ संवादात्मक सत्र भी आयोजित किया गया, जिसमें छात्रों ने सांख्यिकी से जुड़े विभिन्न प्रश्न पूछे और विशेषज्ञों द्वारा उनके समाधान

625 विद्यार्थियों ने दी सामान्य जागरुकता परीक्षा



लडभड़ोल। राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में विवेकानंद केंद्र

लडभड़ोल कालेज में नशामुक्ति का दिया संदेश



लडभड़ोल कालेज में कार्यक्रम के दौरान रंगोली बनाती छात्राएं • जागरण

सिमस : राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में नशामुक्ति क्लब तथा रेड रिबन क्लब के संयुक्त तत्वावधान में नशामुक्ति भारत अभियान के अंतर्गत जागरूकता कार्यक्रमों रंगोली एवं नारा लेखन का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के कार्यकारी प्राचार्य डा. मुनीष ठाकुर ने की, जबकि कार्यक्रम के संयोजक प्रो. संजीव तथा डा. प्रीति रहे। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में नशामुक्ति एवं एचआइवी एड्स संबंधी जागरूकता को बढ़ावा देना रहा। इस अवसर पर कालेज परिसर में रंगोली एवं नारा लेखन कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। प्रतिभागियों ने नशामुक्ति तथा स्वास्थ्य जागरूकता विषयों पर रचनात्मक और प्रभावशाली संदेश प्रस्तुत किए। इस अवसर पर डा. मुनीष ठाकुर ने विद्यार्थियों को नशे से दूर रहने, स्वस्थ जीवनशैली अपनाने तथा समाज में सकारात्मक संदेश प्रसारित करने का आह्वान किया। (संस)

दैनिक भास्कर हिमाचल भास्कर 01-12-2025

लडभड़ोल कॉलेज में विवेकानंद केंद्र की जागरुकता परीक्षा आयोजित



लडभड़ोल | राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में विवेकानंद केंद्र कन्याकुमारी, शाखा कांगड़ा द्वारा सामान्य जागरूकता परीक्षा आयोजित की गई। कार्यक्रम में उत्तर प्रांत संचालक श्री अशोक रैणा मुख्य अतिथि रहे, जबकि अध्यक्षता कार्यकारी प्राचार्य प्रो. संजीव कुमार ने की। श्री रैणा ने विद्यार्थियों को स्वामी विवेकानंद के आदर्शों पर चलने और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने का संदेश दिया। परीक्षा में कॉलेज व आसपास के 21 विद्यालयों के कुल 625 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में आईक्यूएसी, करियर काउंसलिंग सेल और शिक्षकों एमएल शर्मा, प्रो. यशपाल सहित अन्य का योगदान सराहनीय रहा।

मीडिया की नजर में लड भड़ोल महाविद्यालय

सड़क सुरक्षा बारे दी जानकारी



लडभड़ोल : सड़क सुरक्षा कार्यक्रम में महाविद्यालय स्टाफ सहित उपस्थित विद्यार्थी। (भारद्वाज)

लडभड़ोल, 27 फरवरी (भारद्वाज): राजकीय विद्यालय लडभड़ोल में रोड सेफ्टी क्लब के धान में सड़क सुरक्षा जागरूकता को बढ़ावा हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया । इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य काश चौहान के मार्गदर्शन एवं क्लब संयोजक पंकज कुमार के नेतृत्व में नारा लेखन तथा स्टर मेकिंग प्रतियोगिताएं आयोजित कीं।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को ड़क सुरक्षा नियमों के प्रति जागरूक करना तथा ाज में सुरक्षित यातायात के प्रति सकारात्मक संदेश प्रसारित करना था। विद्यार्थियों ने अत्यं रचनात्मक और प्रभावशाली पोस्टर एवं स्लोग प्रस्तुत किए, जिनमें हैल्मेट का उपयोग, सीट बैल की अनिवार्यता, नशे में वाहन न चलाने औ यातायात नियमों के पालन जैसे महत्वपूर्ण विषय को प्रमुखता दी गई।

पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता में पल्लवी ने प्रथम दीपिका ने द्वितीय तथा रोहित ने तृतीय स्थान प्राप किया। नारा लेखन प्रतियोगिता में मुस्कान ने प्रथम प्रिया ने द्वितीय तथा पल्लवी ने तृतीय स्थान प्राप किया।

विद्यार्थियों को बताया सांख्यिकी उत्पादों का महत्व

लडभड़ोल, 14 मार्च (भारद्वाज): जकीय महाविद्यालय लडभड़ोल के र्थशास्त्र विभाग द्वारा विद्यार्थियों में ांख्यिकी के महत्व के प्रति जागरूकता ढ़ाने के उद्देश्य से इंटरैक्टिव कार्यशाला ा आयोजन सपोर्ट फॉर स्टैटिसटिक्स ट्रेंथनिंग योजना के अंतर्गत किया गया, समें विद्यार्थियों को दैनिक जीवन तथा भिन्न क्षेत्रों में सांख्यिकी उत्पादों ा महत्व बताया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता हाविद्यालय के प्राचार्य प्रकाश चौहान की। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में सांख्यिकी का महत्व अत्यंत बढ़ गया है तथा नीति निर्माण, आर्थिक विकास, शोध कार्य और दैनिक जीवन के निर्णयों में सांख्यिकीय आंकड़ों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। संयोजक प्रो. तिलक शर्मा ने कार्यशाला के उद्देश्य पर प्रका डालते हुए बताया कि इस प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों सांख्यिकीय ज्ञान और जागरूकता क बढ़ावा दिया जा रहा है।



लडभड़ोल : कार्यशाला के दौरान स्टाफ व विद्यार्थी सामूहिक चित्र में। (भारद्वा

स्वयंसेवियों ने सीखा आचार बनाना

लडभड़ोल कालेज में एन.एस.एस. शिविर शुरू

लडभड़ोल, 17 दिसम्बर (भारद्वाज): राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में कृषकार की एन.एस.एस. शिविर का उद्घाटन कार्यक्रमाधिकारी प्राचार्य डा. मनीष द्वारा किया गया। योगदान और योगाभ्यास से प्रारंभ हुए इस कार्यक्रम में डा. मनीष ने एन.एस.एस. के उद्देश्यों, लक्ष्यों और राष्ट्र निर्माण में इसकी भूमिका पर चर्चा की। स्वयंसेवकों ने प्रोजैक्ट कार्य में महाविद्यालय परिसर को स्वच्छ बनाए तथा परिसर क्षेत्र की सड़कें और झाड़ियां साफ कीं।

दोपहर के सत्र में पराचार्य मनोवैज्ञानिक लीना मेहता ने मैंटल हैल्थ पर प्रकाश डाला। स्किल डिवैल्पमैंट के तहत स्वयंसेवियों ने आचार निर्माण प्रशिक्षण लिया, जिसकी बिक्री बाजार स्टाल पर होगी।

शिविर 23 दिसम्बर तक 50 स्वयंसेवकों के साथ चलेगा। कार्यक्रम अधिकारी सहायक आचार्य संजीव कुमार ने कहा कि यह शिविर विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक एवं कौशल विकास को मजबूत करेगा।



लडभड़ोल : महाविद्यालय परिसर की सफाई करते स्वयंसेवी। (भारद्वा

लडभड़ोल महाविद्यालय में नवाजे मेधावी



लडभड़ोल : राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल की छात्रा को सम्मानित करते मुख्यातिथि जीवन ठाकुर। (भारद्वाज)

मंगलवार को मनाया वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह

लडभड़ोल, 17 फरवरी (भारद्वाज): राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में सत्र 2025-26 का वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह आयोजित किया गया। समारोह में वरिष्ठ अधिवक्ता व सामाजिक कार्यकर्त्ता जीवन ठाकुर बतौर मुख्यातिथि शामिल हुए।

महाविद्यालय प्राचार्य प्रकाश चौहान ने महाविद्यालय के वर्षभर की गतिविधियों का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत किया। इसके बाद मुख्यातिथि ने शैक्षणिक, खेलकूद और सांस्कृतिक उपलब्धियों में उम्दा प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों स्वाति, फरहान, राखी, पल्लवी, महक, अंसिका, शिवम, दीक्षा, श्रेया, तनु, सिया, आसिफ, गुंजन, मुस्कान, सौरभ, कोमल, शबनम, सेजल, रिशु, शिवानी, मुनीश व सूजल आदि को सम्मानित किया।

समारोह में छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक व रंगारंग कार्यक्रम भी पेश किए। महाविद्यालय प्राचार्य प्रकाश चौहान ने महाविद्यालय परिवार के समस्त सदस्यों को सफल कार्यक्रम आयोजन के लिए बधाई व शुभकामनाएं दीं।

विद्यार्थियों ने पेश किया राग यमन

जोगिंद्रनगर (अमिता/विनोद): राजीव गांधी स्मारक राजकीय महाविद्यालय जोगिंद्रनगर में मंगलवार को संगीत विभाग एवं कल्चरल क्लब द्वारा सुर संगम सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की शुरूआत मां सरस्वती वंदना से हुई, जिसके बाद संगीत विभाग की सहायक प्रोफैसर मोहिनी द्वारा कार्यवाहक प्राचार्य प्रोफैसर दीपक मोहन तथा महाविद्यालय के सभी शिक्षकों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम में संगीत विभाग के अंशुल, ईशा, संतोष, शगुन व सानिया द्वारा सितार पर राग यम प्रस्तुत किया गया। प्रशांत, शोभा, कमलेश तथा मोहित द्वारा विभिन्न मन मोहक प्रस्तुतियां दीं जबकि मंच संचालन व एवं कमलेश द्वारा किया गया।

संगीत विभाग के डा. नवीन राठौर कार्यक्रम में आए हुए सभी शिक्षकों त विद्यार्थियों का धन्यवाद किया। कार्यक्र में प्रो. मंजू बाला, प्रो. दीपक, प्रो. स्मृति प्रो. नवीन निश्चल सूद, प्रो. पूनम, प्र कौमुदी, प्रो. अतुल, प्रो. ममता, प्र ज्योति प्रकाश, प्रो. अनुपम व असिस्टैं लाइब्रेरियन मीना उपस्थित रहीं।



जोगिंद्रनगर: राजीव गांधी कालेज में सुर संगम कार्यक्रम के उपरांत छात्र-छात्राएं प्राध्यापक सामूहिक चित्र में। (अमित

मीडिया की नजर में लड भड़ोल महाविद्यालय

कालेज के छात्रों ने रोड सेफ्टी पर जगाया अलख



लडभड़ोल: नशे के खिलाफ जागरूकता रैली निकालते छात्र

लडभड़ोल। राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल के रोड सेफ्टी क्लब द्वारा शनिवार को सड़क सुरक्षा के प्रति जनजागरूकता बढ़ाने हेतु एक जागरूकता रैली का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का नेतृत्व महाविद्यालय के प्राचार्य प्रकाश चौहान के मार्गदर्शन में तथा क्लब के संयोजक प्रो. पंकज कुमार के निर्देशन में किया गया। रैली का शुभारंभ महाविद्यालय परिसर से हुआ, जिसमें छात्र-छात्राओं, प्राध्यापकों एवं गैर-शिक्षण कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतिभागियों ने सड़क सुरक्षा से संबंधित नारों एवं संदेशों के माध्यम से आम जनता को यातायात नियमों का पालन करने, हेलमेट एवं सीट बेल्ट के उपयोग तथा वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग न करने के लिए प्रेरित किया। प्राचार्य प्रकाश चौहान ने अपने संबोधन में कहा कि सड़क सुरक्षा केवल व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं बल्कि सामाजिक दायित्व भी है। उन्होंने विद्यार्थियों से आग्रह किया कि वे स्वयं यातायात नियमों का पालन करें और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें। कार्यक्रम संयोजक प्रो. पंकज कुमार ने बताया कि इस प्रकार के कार्यक्रमों का उद्देश्य युवाओं में अनुशासन एवं जिम्मेदारी की भावना विकसित करना है, ताकि सड़क दुर्घटनाओं को कम किया जा सके।

नशे के खिलाफ निकाली जागरूकता रैली



लडभड़ोल में रैली निकालने के दौरान मौजूद विद्यार्थी व स्टाफ ● जागरण

लडभड़ोल : राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल के रेड रिबन क्लब और यूथ रेड क्रास क्लब ने गांव ममाण में नशे के विरुद्ध जन-जागरूकता रैली का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य युवाओं और स्थानीय ग्रामीणों को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करना और स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देना रहा। रैली के दौरान विद्यार्थियों ने गांव में स्थित वट वृक्ष को गोद लेकर उसके संरक्षण का संकल्प लिया। इसके साथ ही, विद्यार्थियों ने स्थानीय गांव बनांदर और स्यूण के पेयजल स्रोतों की सफाई अभियान चलाकर जल स्रोतों की स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रकाश चौहान ने इस प्रयास की सराहना की और विद्यार्थियों को सामाजिक सरोकारों से जुड़े कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इस आयोजन में क्लब की संयोजिका डा प्रीति और प्रो. अनीता शर्मा का विशेष योगदान रहा। (जासकें)

लडभड़ोल कॉलेज के होनहार किए सम्मानित

संवाद न्यूज एजेंसी

लडभड़ोल (मंडी)। राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में मंगलवार को शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में एक पहल माउंटेन सेवा समिति के अध्यक्ष जीवन ठाकुर ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत कर मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि जीवन ठाकुर ने किया। इसके पश्चात सीएसआईए अध्यक्ष पल्लवी ने मुख्य अतिथि, प्राचार्य व अन्य अतिथियों का स्वागत किया। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रकाश चौहान ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए वर्षभर आयोजित

महाविद्यालय में वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह आयोजित

शैक्षणिक, खेलकूद, सांस्कृतिक तथा अन्य सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों का विस्तृत विवरण साझा किया।

समारोह के दौरान मुख्य अतिथि ने महाविद्यालय के मेधावी विद्यार्थियों को उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए स्मृतिचिह्न, पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

सम्मानित होने वाले विद्यार्थियों में स्थति, फरहान, राखी, पल्लवी, महक, अंशिका, शिवम, दीक्षा, श्वेता, तनु, सिया, आसिफ, गुंजन, मुस्कान, सौरभ, कोमल, शबनम,



लडभड़ोल कॉलेज में नृत्य की प्रस्तुति देतीं छात्राएं। फोटो: संवाद

सेजल, रिशु, शिवानी, मुनीश और सुजल सहित अन्य छात्र-छात्राएं शामिल रहे। इसके अतिरिक्त छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर समारोह में चार चांद लगाए। मुख्य अतिथि जीवन ठाकुर ने कहा कि अनुशासन और कड़ी मेहनत ही सफलता की कुंजी है। उन्होंने विद्यार्थियों से नशे जैसी बुराइयों से दूर रहकर अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहने का आह्वान किया।

मंडी | amarujala.com

साहिबजादों के साहस और राष्ट्र भक्ति को अपनाने का आह्वान

राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में वीर बाल दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

संवाद न्यूज एजेंसी

लडभड़ोल (मंडी)। राजकीय महाविद्यालय लडभड़ोल में शुक्रवार को वीर बाल दिवस मनाया गया।

कार्यक्रम सिखों के दसवें गुरु गोविंद सिंह के साहिबजादों की शहादत की स्मृति में आयोजित किया गया। इस अवसर पर चौहान ने कहा कि गुरु गोविंद सिंह जी के साहिबजादों का बलिदान देश के इतिहास में अद्वितीय है और यह हमें साहस, धर्म, सत्य तथा राष्ट्रभक्ति के मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा देता है।

उन्होंने युवाओं से इन आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का आह्वान किया। कार्यक्रम के संयोजक प्रो. संजीव कुमार ने उपलक्ष्य में विद्यार्थियों को साहिबजादों के जीवन और बलिदान पर आधारित एक प्रेरणादायक फिल्म दिखाई गई।

फिल्म प्रदर्शन के उपरांत इसी विषय पर निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता में दीपिका ने प्रथम

लडभड़ोल कालेज में एनएसएस शिविर का आगाज



लडभड़ोल। राजकीय महाविद्यालय लड़भड़ोल में सात दिवसीय एनएसएस विशेष शिविर का उद्घाटन कार्यकारी प्राचार्य डॉ. मनीष द्वारा किया गया। वंदना और योगाभ्यास से प्रारंभ हुए इस कार्यक्रम में एनएसएस के समाज-रचना महत्व पर प्रकाश डाला गया। डॉ. मनीष ने संबोधन में एनएसएस के उद्देश्यों, लाभों और राष्ट्र निर्माण में इसकी भूमिका पर विस्तार से चर्चा की। स्वयंसेवकों ने प्रोजेक्ट वर्क में महाविद्यालय परिसर को स्वच्छ बनाया परिसरक्षेत्र की सड़कें और झाड़ियां साफ कीं। दोपहर में लीना मेहता परामर्श मनोवैज्ञानिक ने मेंटल हेल्थ पर प्रबोधन दिया। स्किल डेवलपमेंट के तहत अचार निर्माण प्रशिक्षण लिया गया, जिसकी बिक्री बाजार स्टॉल पर होगी। शिविर 17 से 23 दिसंबर तक 50 स्वयंसेवकों के साथ चलेगा। सहायक आचार्य संजीव कुमार (कार्यक्रम अधिकारी) ने अनुशासन एवं योग-ध्यान सेशन संचालित किया। उन्होंने कहा कि यह शिविर छात्रों के शारीरिक, मानसिक एवं कौशल विकास को मजबूत करेगा।

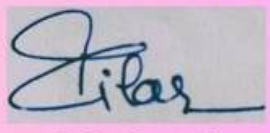
Description of College Magazine - Vidyarthi Darpan

(Rule - 8)

1	Place of Publication	Government Degree College, Lad Bharol
2	Periodicity of Publication	Yearly
3	Name of Principal	Dr. Munish Thakur
4	Nationality	Indian
5	Address	Government Degree College, Lad Bharol, District Mandi, Himachal Pradesh Pin-175016
6	Address of Printing/Designing Press	Upadhyay Enterprises, Baijnath
7	Ownership of Magazine	Government Degree College, Lad Bharol

The views expressed by the contributors are their own. The editorial board does not necessarily confirm and share to the views expressed by them.

I, hereby solemnly declare that the above information is correct and true to the best of my knowledge and belief.



Chief Editor